विक्रम संवत् 2081 ▪ ज्येष्ठ/आषाढ़ मास(04) ▪ 01 जून 2024 ▪ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

चैतेति

पूरे देश में कमल खिला

मोदी जी की गारंटी जीत गई

» श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लगातार तीसरी बार भारत के प्रधान मंत्री पद का कार्यभार संभाला।

» प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पहली केंद्रीय कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता की।

» प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आम चुनाव 2024 में एनडीए की लगातार तीसरी जीत पर अभिनंदन किया गया।

» केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने सोमनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की।

» भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली।

» प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राजघाट पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

» प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की समाधि "सदैव अटल" पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

» प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय • संजय गोविन्द खोचे 04

- मोदी सरकार तीसरी बार

कवर स्टोरी 05

- पूरे देश में कमल खिला- मोदी जी की गारंटी जीत गई

- **भाजपा-एनडीए सरकार तीसरी बार** 09
  - » तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय...
- **भाजपा-एनडीए सरकार तीसरी बार** 12
  - » जीत कार्यकर्ताओं के परिश्रम का प्रतिफल...
- **बड़े फैसले और तेज विकास** 13
  - » एनडीए का यह कार्यकाल बड़े फैसलों और तेज विकास के लिए है...
- **भाजपा-एनडीए सरकार तीसरी बार :** 22
  - » लगातार तीसरी बार भाजपा-एनडीए सरकार-जगत प्रकाश नड्डा...
- **एमपी के मन में मोदी :** 24
  - » एमपी के मन में मोदी का भाव साकार हुआ-शिवराज सिंह चौहान...
- **साधना से नए संकल्प :** 25
  - » कन्याकुमारी में साधना से नए संकल्प- पीएम मोदी...
- **एनडीए सरकार :** 28
  - » केंद्रीय मंत्रिपरिषद...
- **आलेख : एस. जयशंकर** 30
  - » हर दिन बदलती दुनिया में कहां खड़ा है भारत...
- **आलेख : हरदीप सिंह पुरी** 32
  - » समग्र विकास को समर्पित एनडीए सरकार...
- **आलेख : अरुण सिंह** 34
  - » युवाओं को दिशा देतीं मोदी सरकार की क्रांतिकारी योजनाएं...
- **बलिदान दिवस** 37-39
  - » रानी लक्ष्मीबाई
  - » रानी दुर्गावती
  - » बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक
- **विचार प्रवाह : पं. दीनदयाल उपाध्याय** 40
  - » समाज और विचारधारा...

• मुख्य व्रत-त्यौहार

2. अचला/ अपरा एकादशी व्रत 4. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 5. भ. शांतिनाथ ज. एवं मोक्ष, पाक्षिक प्रतिक्रमण, 6. वट सावित्री अमावस्या व्रत, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या, रोहिणी व्रत 7. चन्द्रदर्शन 9. रम्भा तीज व्रत 10. विनायकी चतुर्थी व्रत 11. श्रुत पंचमी 15. महेश नवमी 16. गंगा दशहरा 17. निर्जला एकादशी व्रत 19. प्रदोष व्रत 21. द. वट सावित्री पूर्णिमा व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण 22. स्नानदान पूर्णिमा 25. अं. गणेश चतुर्थी व्रत 29. शीतलाष्टमी (बसोरा)

• मुख्य जयंती-दिवस

1. अंतर्राष्ट्रीय बाल्य रक्षा दिवस 5. विश्व पर्यावरण दिवस 9. बिरसा मुण्डा शहीदी दिवस, महाराणा प्रताप व छत्रसाल जयंती 12. साँई टेऊँराम पुण्यतिथि 14. विश्व रक्तदान दिवस 16. माँ गंगा अवतरण दिवस, महर्षि गालव अवतरण दिवस, सिंधु सम्राट म. दाहरसिंह श. दि. 18. रानी लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस 21. अंतर्राष्ट्रीय योग एवं संगीत दिवस 24. रानी दुर्गावती बलिदान दिवस 26. अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस 27. मधुमेह जागृति दिवस

वर्ष-56, अंक : 04, भोपाल, जून 2024

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

समृद्धि का आधार धर्म है। इस संबंध में हम पाते हैं कि हमारा आधार धर्म, अभावात्मक नहीं है। हमारे यहां अभाव का नहीं संयम का विचार किया गया है। सादा जीवन का विचार किया गया है, धन पैदा किया तो उसका उपयोग धर्मानुसार करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

यह जनादेश कोई अचानक आया जन सैलाब नहीं, लगभग 30 वर्षों का साझा संघर्ष है, सबका विश्वास है, सबका सामंजस्य, सबका सम्मान, सबका प्रयास, सबका भरोसा व सबका भारत माता के श्री चरणों में सादर नमन् है।

मोदी सरकार तीसरी बार

2024 का लोकसभा चुनाव कई मायनों में अपना विशेष महत्व रखता है। एक तरफ एनडीए का गठबंधन- जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी कर रहे थे, कर रहे हैं। दूसरी तरफ- कई बार गठबंधन बनके टूट गए, फिर मौकापरस्ती के लिए चुनाव में एक साथ और चुनाव के तुरंत बाद अलग-अलग।

दोनों गठबंधनों का आधार ही अलग-अलग था। एनडीए गठबंधन केवल चुनाव के लिए, चुनाव तक का गठबंधन नहीं था, इसके आधार में, इस गठबंधन की परिकल्पना और रचना दशकों पुरानी है। इसके नीति निर्माता व एनडीए गठबंधन के संगठक स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी, राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी, श्री लालकृष्ण आडवानी जी, डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी जी, स्वर्गीय श्री बाल ठाकरे जी, स्वर्गीय श्री शरद यादव जी, स्वर्गीय श्री जॉर्ज फर्नांडिस जी, स्वर्गीय श्री प्रकाश सिंह बादल जी जैसी अनगिनत महान विभूतियां एवं तपस्वी नेताओं ने 1998 में कांग्रेस के कुचक्र से जनता को मुक्ति दिलाने के लिए एनडीए बनाया था तथा एनडीए के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी 1998 व 1999 के आम चुनाव में जनता के आशीर्वाद से प्रधानमंत्री बन चुके हैं। इसके बाद 2004 व 2009 के चुनाव में गठबंधन को हार का सामना करना पड़ा, फिर 2014, 2019 व 2024 के चुनाव में गठबंधन स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार चलाने का ऐतिहासिक जनादेश प्राप्त करने में सफल रहा। सरकार चलाने के लिए जनता का बहुमूल्य आर्शीवाद प्राप्त किया। एनडीए गठबंधन के पास नीति है, नियम हैं, सिद्धांत हैं, राष्ट्रवाद है, देशभक्ति है, संविधान के प्रति आस्था, समर्पण व सम्मान है, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय राजनीति के लिए योजनाऐं हैं, वसुधैव कुटुम्बकम का विचार है, सभी के लिए बराबर मौके हैं, दूसरी तरफ प्रतिपक्ष के गठबंधन में कोई विचार, सिद्धांत या योजना जैसे तत्वों का नितांत अभाव है, पर एक तत्व है जो प्रतिपक्ष के गठबंधन को चुनाव तक एक शामियाने के नीचे खड़ा करने के लिए मजबूर करता है। वह है - मोदी विरोध, मोदी भय, मोदी जी से नफरत, सल्तनत बचाने के लिए गठबंधन का चोला ओढ़ना- इस गठबंधन के सदस्यों की चुनाव तक मजबूरी है।

प्रतिपक्ष का यह गठबंधन चुनाव में जनता के सामने कोई विचार, योजना या भविष्य के प्रति सोच-कुछ भी प्रकट करने का साहस भी नहीं जुटा पाया या उनके पास ऐसा कुछ था भी नहीं।

एनडीए गठबंधन में 22 मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल तथा 19 क्षेत्रीय राजनीतिक दल शामिल हैं। इनमें से 12 मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल लोकसभा में अपना प्रतिनिधि भेजने में सफल रहे तथा तीन क्षेत्रीय दलों के प्रतिनिधि भी लोकसभा पहुंचने में सफल रहे। इस तरह 543 सदस्यों में से 293 सदस्यों के साथ एनडीए ने सरकार चलाने का स्पष्ट जनादेश प्राप्त किया। यही नहीं-राज्यसभा में भी 245 सदस्यों में से 121 सदस्यों का समर्थन एनडीए को हासिल है।

यह जनादेश कोई अचानक आया जन सैलाब नहीं, लगभग 30 वर्षों का साझा संघर्ष है, सबका विश्वास है, सबका सामंजस्य, सबका सम्मान, सबका प्रयास, सबका भरोसा व सबका भारत माता के श्री चरणों में सादर नमन् है। एनडीए गठबंधन के 293 लोकसभा सदस्यों में से 240 लोकसभा सदस्य भाजपा के होने के बावजूद 72 सदस्यों के मंत्रिमंडल में सभी दलों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देकर भाजपा ने सबका सम्मान बरकरार रखा है। सबके सम्मान तथा साझा कार्यक्रमों के भाव के कारण ही इतने विशाल गठबंधन में स्थायित्व बरकरार है। एनडीए गठबंधन चुनाव से पहले भी गठबंधन था, चुनाव में भी गठबंधन था, चुनाव के बाद भी गठबंधन है। जनता जान चुकी है भाजपा गठबंधन धर्म निभाना जानती है, भाजपा गठबंधन में रहना जानती है, भाजपा गठबंधन करना जानती है। भाजपा गठबंधन चलाना जानती है, इसलिए भाजपा गठबंधन आज देश के कोने-कोने में फैल चुका है। देश के 20 प्रदेशों में एनडीए गठबंधन की राज्य सरकार हैं तथा 20 प्रदेशों में एनडीए गठबंधन के मुख्यमंत्री हैं।

दूसरी तरफ प्रतिपक्ष का कांग्रेस के नेतृत्व में चुनाव के लिए- मोदी के भय से, मोदी से नफरत के कारण किया गया गठबंधन, जिसके पास ना कोई कार्यक्रम, ना कोई नीति, ना कोई योजना, देश की जनता को अपने गठबंधन के स्थायित्व की आशा प्रकट करने के लिए न कोई इतिहास था, इन 37 राजनीतिक दलों व क्षेत्रीय संगठनों के गठबंधन को 543 सदस्यों के सदन में 236 सदस्यों का समर्थन हासिल है तथा राज्यसभा में 245 सदस्यों में से 92 सदस्यों का समर्थन हासिल है। 28 राज्यों व 8 केंद्र शासित प्रदेशों, कुल 36 प्रदेशों में से 12 प्रदेशों में इंडी गठबंधन 2024 के चुनाव में खाता खोलने में भी सफल नहीं हो पाया। राज्यों की तरफ नजर डालें तो हिमाचल, झारखंड, कर्नाटक, केरल, पंजाब, तमिलनाडु, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल व केंद्र शासित दिल्ली प्रदेश में सरकार बनाने या मुख्यमंत्री बनाने में सफलता मिली है। जिसमें से दिल्ली व पंजाब ने चुनाव के तुरंत बाद गठबंधन से हटने की घोषणा कर दी। इस प्रकार इंडी गठबंधन कुल सात राज्यों तक सीमित हो गया है। जो धीरे-धीरे और कमजोर होता जा रहा है। जनता का स्नेह पाने में असफल सिद्ध हो रहा है। व्यक्तिगत विरोध, व्यक्तिगत नफरत या स्वार्थ की नकारात्मक ऊर्जा से बना गठबंधन कुछ समय का ही सिद्ध होता है। इसमें विश्वास कर पाना संभव नहीं है। गठबंधन स्थाई रखने के लिए साझा कार्यक्रम, आपसी सामंजस्य, व संवाद की आवश्यकता होती है। इसी कारण प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन जनता की आकांक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर रहा है। वह देश को मजबूत व स्थाई नेतृत्व देने में सफल सिद्ध हुआ है और 2047 तक महान भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के मार्ग पर रात- दिन मेहनत कर रहा है। यह गठबंधन की ही ताकत है की 2014 की 11वीं अर्थव्यवस्था-2024 में पांचवी अर्थव्यवस्था बनी तथा 2027 तक तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से अग्रसर है, तीन तलाक एक झटके में गायब हो गया। धारा 370 इतिहास में चली गई। अयोध्या में रामलला विराजमान हैं। महिला शक्ति वंदन अधिनियम पास हुआ। करोना के भीषण संकट से न केवल देश ऊबरा बल्कि दूसरे देशों को भी ऊबरने में सहायता प्रदान करी। सीमाऐं सुरक्षित हैं। पूरे विश्व में भारतवंशीयों का मस्तक गर्व से ऊँचा है। आतंकवाद, नक्सलवाद अंतिम सांसें गिन रहा है। बैंको की बैलेंस शीट मजबूत है। विदेशी निवेश दरवाजे पर लाईन लगा कर खड़ा है। नभ, जल व थल अब घोटालों से मुक्त है। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

पूरे देश में कमल खिला

मोदी जी की गारंटी जीत गई

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए तीसरी बार स्पष्ट बहुमत को पार कर गई या मतदाताओं ने अपना आशीर्वाद मोदी जी को दिया है, परिणाम विस्मयकारी हैं, अभूतपूर्व है, अविस्मरणीय है, अलौकिक है, ऐतिहासिक है, विशेषज्ञयों के लिए चर्चा का विषय है, एनडीए ने 304, और भाजपा ने अपने दम पर 240 सीटें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जीतीं।

मोदी जी का 13 वर्ष का मुख्यमंत्री एवं 10 वर्ष प्रधानमंत्री के कार्यकाल का सकारात्मक प्रभाव मतदाताओं को मोदी जी के पक्ष में मत देने के लिए मजबूर कर देता है, क्योंकि मोदी जी जनता के दिलों पर राज करते हैं।

मोदी जी जनता के दिलों पर राज करते हैं - सोचिए किसी राजनेता के लिए इससे बड़े सम्मान की बात और क्या हो सकती है?

140 करोड़ लोगों का विविधताओं से भरा देश, धर्म, भाषा, बोली, रहन-सहन, खान-पान सभी में विविधता पर नेता एक और सिर्फ एक। देश ही क्या पूरे विश्व में मोदी जी के नाम का जोश, विश्वास, मजबूत नेतृत्व, मतदाताओं के जीवन के उत्साह को मजबूत और रोचक बनाती है। मोदी जी ने नागरिकों के जीवन में जोश, आशा, विश्वास और प्रेम का संचार किया है। आज हर भारतीय अपने आप को अधिक सुरक्षित पाता है और भविष्य के प्रति पहले से ज्यादा आशावान है। यह सब मोदी जी की कठोर तपस्या और सर्मपण का परिणाम है। ''तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें''।

मोदी जी ने नागरिकों के जीवन में जोश, आशा, विश्वास और प्रेम का संचार किया है। आज हर भारतीय अपने आप को अधिक सुरक्षित पाता है और भविष्य के प्रति पहले से ज्यादा आशावान है।

यह सब मोदी जी की कठोर तपस्या और सर्मपण का परिणाम है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें''।

मोदी जी राजनीति के आकाश में सूरज की तरह चमकते हैं, जिस तरह सूर्योदय के पश्चात सारे तारागण लुप्त हो जाते हैं, वैसा ही करिश्मा मोदी जी का है, पर सूरज बनने के लिए तपना भी पड़ता है।

मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के पहले जब देश में आतंकवादी घटनाएं होती थीं तो उस समय की काँग्रेस सरकार कहती थीं-घटनाएं तो होती रहती हैं, ज्यादा बात या हो-हल्ला हुआ तो

डोजियर सौंप दिया जाता था। और ज्यादा कड़ा संदेश देना पड़ता था तो पाकिस्तान के साथ मैच निरस्त कर देते थे। जनता ने वह दौर भी देखा था। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में डोजियर नहीं डोज दी जाती है और डोज भी इतनी शानदार जो मिसाल बन जाती है। बस बात केवल इतनी ही नहीं कि घर में घुसकर डोज दी गई बल्कि डोज दे दी गई इसकी सबसे पहले सूचना भी पाकिस्तान को दी गई।

विपक्षी कहते हैं पाकिस्तान ने चूड़ियां नहीं पहनी हैं- पाकिस्तान परमाणु बम संपन्न देश है। यह वो नेता हैं जो भारत में रहकर, भारत को नीचा दिखाने का काम करते हैं। इसीलिए भारत के जागरूक मतदाताओं ने अपना वोट मां भारती के सपूत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए और भाजपा को दिया।

मोदी जी के शासनकाल में विकास पर बहुत जोर दिया गया। मोदी सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मूल मंत्र पर ही कार्य कर रही है। विकास के नए आयाम स्थापित किए गये। विकास की स्पीड व स्केल को धरातल पर मूर्त रूप दिया गया।

मोदी जी की सरकार ने सरकार बनाने के लिए राजनीति नहीं की-मोदी जी की सरकार ने देश को विकसित किया। आज भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी चर्चा हो रही है। भारत के प्रति पूरे विश्व का नजरिया बदल रहा है। 70 वर्षों से गरीबी हटाओ का नारा गाया गया पर 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर हो गये- और वो फिर वापस पीछे ना आ जाऐं इसकी भी पूरी निगरानी व सहयोग जारी है। विश्वभर के विशेषज्ञ मान रहे हैं 2027 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जावेगा और यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गारंटी है और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गारंटी का मतलब होता है-गारंटी पूरी होने की गारंटी।

माँ-बेटे और विश्व के सबसे बड़े अर्थशास्त्री की सरकार देश की अर्थव्यवस्था को 9 नंबर से 11 नंबर पर ले गए थे, यह आर्थिक कुप्रबंधन का नतीजा था।

इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व से भारत की अर्थव्यवस्था 11वें से पांचवें नम्बर पर आ गयी और भारत की जनता के इस अभूतपूर्व जनादेश के बाद शीघ्र ही यह अर्थव्यवस्था विश्व में तीसरे नम्बर पर आ जावेगी। गजब, असंभव, पर मोदी जी की डिक्शनरी में असंभव शब्द है ही कहां, वे तो आपदा को भी अवसर में बदल देते हैं। निश्चित ही 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र होगा। भारत विश्व की महाशक्ति होगा। यही आर्थिक सुप्रबंधन है।

डबल इंजन की सरकार का ही परिणाम है की बीमारू राज्य मध्य प्रदेश अब देश के अग्रणी राज्यों की श्रेणी में खड़ा हो गया है।

ऐसा नहीं है इस चुनाव में विपक्ष था ही नहीं। विपक्ष ने आधे-अधूरे मन से गठबंधन बनाया था। उन्हें भी मालूम था कि जनता 70 साल के कुशासन और 10 साल के मोदी जी के सुशासन को अच्छी तरह समझ चुकी है। मोदी जी के खिलाफ ऊर्जा खर्च करने का क्या लाभ? गठबंधन में थे भी कौन-कौन से महानुभाव- कोई जेल में, कोई बेल पर, कोई परिवारवाद की उपज, कोई भाग-भाग का थक चुका, फिर भी, फिर से भागना पड़ रहा है, कोई लोकसभा चुनाव में जनता का सामना करने से बचने के लिए पिछले दरवाजे का उपयोग कर चुका। कोई 2जी घोटाले का आरोपी, कोई पनडुब्बी घोटाले वाला, कोई हेलीकॉप्टर घोटाले वाला, कोई कॉमनवेल्थ घोटाले वाला, कोई पोंजी स्कीम घोटाले वाला, कोई राशन घोटाले वाला, कोई भर्ती घोटाले वाला, कोई कोयला घोटाले वाला, कोई पशु तस्करी घोटाले वाला, शराब घोटाले वाला, अवैध खनन घोटाले वाला, आदिवासियों की जमीन लूटने वाला और सेना की जमीन पर भी हाथ साफ करने में कोई दिक्कत नहीं, वहां भी घोटाले की कोशिश करने वाला, घरों से 300 करोड़ की नगद राशि की जप्ती को सरकारी एजेंसियों का अत्याचार बताने वाला, दलित, आदिवासी, अति पिछड़ा समुदाय के हक को छीन कर अपने वोट बैंक विशेष वर्ग को देने का प्रयास करने वाला, संविधान को न मानने वाला, जैसी राष्ट्र विरोधी ताकतों का जमावड़ा, वीर सावरकर का नाम लेने में शरमाने वाला, 370 हटाने का विरोध करने वाला, प्रभु श्री राम को काल्पनिक बता कर हलफनामा पेश करने वाला, स्थानीय भाषा समाप्त करने का प्रयास करने वाला, चिट फंड घोटाले वाला, निजी सचिव का नौकर भी नोटों का पहाड़ रखता हो, विकास को ब्रेक व भ्रष्टाचार फुल स्पीड पर, जानवरों का चारा भी खा जाओ कोई शर्म नहीं, अपराध के इंडस्ट्री के प्रवर्तक, संरक्षक व भागीदार, लैंड जिहाद-फिर लव जिहाद-फिर वोट जिहाद करने वाले, बाबा साहब अंबेडकर के संविधान को बदलना चाहने वाले, बाटला हाउस के आतंकवादियों के गम में आंसू बहाने वाले, रंग भेदी व नस्लभेदी टिप्पणी करने वाले, सनातन धर्म को डेंगू, मलेरिया और एचआईवी कहकर अपमानित करने वाले, प्रभु श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का बहिष्कार करने वाले, सेना पर हुए आतंकी हमले को चुनावी स्टंट बताने वाले, पाखंड, झूठ और विभाजन की मानसिकता वाले लोग, यही इनके काम थे,

मोदी जी की सरकार ने सरकार बनाने के लिए राजनीति नहीं की-मोदी जी की सरकार ने देश को विकसित किया। आज भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी चर्चा हो रही है। भारत के प्रति पूरे विश्व का नजरिया बदल रहा है। 70 वर्षों से गरीबी हटाओ का नारा गाया गया पर 10 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर हो गये- और वो फिर वापस पीछे ना आ जाऐं इसकी भी पूरी निगरानी व सहयोग जारी है।

यही उनके संगठन का आधार था, यही इनकी मानसिकता थी, और इन्ही कुत्सित इरादों के भरोसे उन्हें विश्वास था कि जनता उन्हें वोट देगी, और जनता उन्हें राज करने का और परिवारवाद को पोषित करने का लाइसेंस देगी। पर जनता ने इस इरादे को पूरी तरह से नकार दिया। यह चुनाव परिणाम नकारात्मक राजनीति करने वालों के लिए सबसे बड़ा सबक है।

2024 का चुनाव मोदी जी के लिए 5 वर्ष

का चुनाव नहीं था। पांच साल सरकार चलाने का चुनाव नहीं था। 5 वर्ष सत्ता में वापस आने का चुनाव नहीं था। मोदी जी के लिए 2024 का चुनाव आने वाले 25 वर्षों का रास्ता बनाने का चुनाव था। देश का भविष्य बनाने का चुनाव था। अगले 1000 वर्ष तक मजबूत भारत की नींव तैयार करने का चुनाव था।

बहुत फर्क था मोदी जी और विपक्ष के इरादों में। विपक्ष लड़ रहा था अपनी पारिवारिक सल्तनत बचाने को, अपनी पहचान बचाने को, अपनी अकूत सम्पत्ति बचाने को, अपने पुराने कारनामों पर पर्दा डाले रखने को, अपने भविष्य के लिए, अपने बच्चों के भविष्य के लिए, दूसरी तरफ मोदी जी चुनाव लड़ रहे थे, मोदी जी काम कर रहे थे, मेहनत कर रहे थे-बिना रुके-बिना थके, भारत के लिए, भारत की आने वाली पीढ़ियों के लिए, भारत के बच्चों के लिए।

मोदी जी की विरासत में है क्या? इस पर भी चर्चा होना चाहिए। इसका भी विश्लेषण होना चाहिए। इस पर भी डिस्कशन होना चाहिए। आम जनता में भी इसका डिस्कशन होना चाहिए। मोदी जी की विरासत में हर गरीब का पक्का घर है, माता-बहनों को मिला शौचालय है, दलितों, पिछड़ों को मिला बिजली, गैस, नल कनेक्शन, मुफ्त अनाज, मुफ्त इलाज, किसानों को मिली सम्मान निधि, गरीब के दरवाजे पर पहुंची सरकारी योजनाएं, पहली बार इस देश के गरीब ने अनुभव किया सरकार दरवाजे पर पहुंचकर दरवाजा खटखटा करके अपनी योजनाएं या योजनाओं का लाभ उठाने के लिए गरीब लाभार्थियों तक पहुंच रही है। तीन तलाक रूपी तलवार के टुकड़े टुकड़े, मुसीबत में विदेश में फंसे भारतीयों की सकुशल देश वापसी, बिना लीकेज के सरकारी फंड ट्रांसफर व्यवस्था सीधे हितग्राहियों के खाते में, सेना के मान-सम्मान की चिंता, वर्षों से पेंडिंग वन रैंक-वन पेंशन का सम्मानजनक हल, बुजुर्गों को फ्री इलाज की सुविधा, हर घर मुफ्त बिजली और अतिरिक्त बिजली की खरीददार सरकार, मतलब मुफ्त बिजली भी और अतिरिक्त आय भी, कर्पूरी ठाकुर, आंध्र प्रदेश के तेलगु बिट्टा-पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.व्ही. नरसिंहाराव को भारत रत्न, 500 वर्षों से चले संघर्ष को समाप्त कर श्री राम मंदिर का शांतिपूर्ण स्थाई हल के साथ श्री राम मंदिर का निर्माण, देश के नेतृत्व में नारी शक्ति वंदन अधिनियम से 33 प्रतिशत महिला शक्ति की भागीदारी सुनिश्चित, देश के विकास के लिए HIRA (हाईवे, इंटरनेट, रेलवे, एयरवेज), एक देश-एक टैक्स, आदिवासी बेटी भारत की राष्ट्रपति, विकास, गरीब कल्याण, राष्ट्रीय सुरक्षा व देश का सम्मान सर्वोपरि, जनधन- आधार- मोबाइल के त्रिमूर्ति से लाभार्थियों का शत प्रतिशत पैसा सीधे लाभार्थी के खाते में, धारा 370 का अंतिम संस्कार और अनेकों राष्ट्र निर्माण के कार्य, यही है मोदी जी की विरासत, मुस्कुराता भारतीय और विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत।

लोकतंत्र में विपक्ष का होना भी जरूरी है। पर आखिरकार यह विपक्ष क्यों फेल हो रहा है- लगातार तीसरी बार मोदी जी से क्यों सामना नहीं कर पाया। इतनी दरिद्रता क्यों है? मोदी जी के सामने विपक्ष टिक भी नहीं पाता ऐसा क्यों है? विपक्ष को इसका आत्म चिंतन, आत्म विश्लेषण करना चाहिए। चुनाव परिणाम अंतिम पड़ाव नहीं होता। इतनी भीषण हार के बाद आत्म विश्लेषण, आत्म चिंतन करके भविष्य के लिए रास्ता बनाना चाहिए। विपक्ष को हार स्वीकार करना चाहिए और जनमत का निर्णय स्वीकार करके आत्म विश्लेषण करना चाहिए। विपक्ष को अपनी गलतियों पर, कमियों पर भी ध्यान देना चाहिए। क्यों मोदी जी के सामने नहीं टिक पाते? विपक्ष को भारत, भारतीयों और सनातन के सम्मान से खिलवाड़ बंद करना चाहिए। मोदी जी का विरोध करते-करते देश का विरोध करने का अपराध नहीं करना चाहिए। सेना के अपमान करने की गलती के लिए देश से माफी मांगना चाहिए। विपक्षी देशवासियों को अनपढ़ तक कह गए। मोदी जी का विरोध करते-करते देशवासियों को अनपढ़ कहने का तात्पर्य भी नहीं समझे। यह विपक्ष अपना रिपोर्ट कार्ड बोल गया की 70 साल शासन करने के बाद विपक्ष देश को अनपढ़ छोड़ कर गया या 70 साल के शासन के रिपोर्ट कार्ड में विपक्ष देश को किस स्थिति में छोड़कर गया?

आज देख लीजिए देश में कितने डिजिटल ट्रांजेक्शन हो रहे हैं। मजबूत व सशक्त भारत जो अपने निर्णय स्वयं करता है उसे पाकिस्तान के परमाणु बम का डर दिखाने का पाप करने के लिए प्रायश्चित करना चाहिए।

प्रधानमंत्री देश के होते हैं। 140 करोड़ देशवासियों के होते हैं। किसी दल विशेष के नहीं। उनके सम्मान से खिलवाड़ विपक्ष को उल्टा पड़ गया। दशकों से जनता को झूठे वादों के सहारे चलाने वालों को मोदी जी की गारंटी के सामने खड़ा होने का मौका भी नहीं मिला।

मोदी जी ने मतदाताओं को गारंटी दी, मतदाताओं ने मोदी जी की गारंटी को विकास की गारंटी, सुरक्षा की गारंटी, विश्व में भारत के सम्मान की गारंटी, गरीबों के लिए 3 करोड़ घरों की गारंटी, बुजुर्गों के इलाज की गारंटी, 2027 में तीसरी अर्थव्यवस्था की गारंटी, 2047 तक विकसित भारत की गारंटी, मजबूत, सशक्त निर्णय लेने में सक्षम 56 इंच के सीने वाले भारत की गारंटी, महिला सम्मान की गारंटी माना, सिर्फ गारंटी ही नहीं माना, गारंटी को गारंटी पूरा होने की भी गारंटी माना। आज भारत डिजिटल पावर का भारत है, आज भारत स्टार्टअप पावर का भारत है, आज भारत विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था वाली महाशक्ति का भारत है।

पैसे पेड़ पर नहीं लगते- यह कहकर अपनी जिम्मेदारियों से बचने वाला भारत अब नहीं है, अब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 11वीं अर्थव्यवस्था से पांचवी अर्थव्यवस्था बनने वाला भारत है, स्पेस पावर वाला भारत है।

2024 का चुनाव इतिहास में याद किया

जाएगा। इस चुनाव में जनता ने भ्रष्टाचार, परिवारवाद, तुष्टिकरण, देश विरोधी गतिविधियों को पोषित करने वाले राजनैतिक दल व नेताओं को नकार कर स्वच्छ, ईमानदार, पारदर्शी शासन चलाने वाले प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और एनडीए को सत्ता सौंप कर विपक्ष को करारा जवाब दिया है। आतंकवादियों की हिमायत और नरमी दिखाने वालों को न चुन कर- घर में घुसकर मारने वालों को चुनकर जनता ने करारा जवाब दिया है। घोटालेबाजों को उनके सही स्थान पर पहुंचा दिया है या पहुंचने के लिए रास्ता बना दिया है। धारा 370 को हटाने का विरोध करने वालों को घर पर बैठा दिया है।

प्रभु श्री राम से बैर रखने वालों को घर बैठने के लिए मजबूर कर दिया है। ओबीसी आरक्षण को वोट बैंक को देने का प्रयास करने वालों को ताकत विहीन बना दिया है। मतदाताओं ने हैदराबाद मुक्ति दिवस जोर-जोर से मनाने के लिए मोहर लगायी है, मिडिल क्लास की कमाई को वोट बैंक को बांटने की योजना को हथौड़े से कूट-कूट कर दफन कर दिया है। अब कोई भारत माता के सपूतों को चीन-अफ्रीका का बताने का साहस नहीं कर पाएगा। भ्रष्टाचार को बचाना संभव नहीं।

भ्रष्टाचारियों को बचाना संभव नहीं, भ्रष्टाचार हटाने और तेजी से प्रयास करने के लिए जनता ने अपनी मोहर लगा दी है।

विपक्ष और मोदी जी में उतना ही अंतर है जैसे कौवे जिस सरोवर में डुबकी लगाते हैं, हंस उस सरोवर में डुबकी कभी नहीं लगाते।

कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष की स्थिति इतनी गैर जिम्मेदारी की देखी गई, इतनी दरिद्रतापूर्ण देखी गई कि10 वर्षों के काल में विपक्ष अपनी भूमिका की अदायगी भी नहीं कर पाया। 10 वर्षों के काल में विपक्ष अपनी उपस्थिति भी दर्ज नहीं करा पाया। मजेदार बात तो यह है जिस बेरोजगारी की बात कांग्रेस पूरे चुनाव में करती रही- जनता ने उस कांग्रेस को ही बेरोजगार बना दिया। जिन मोदी जी पर कांग्रेस ने हिंदू- मुस्लिम में विभाजनकारी राजनीति का आरोप लगाकर अपनी राजनीतिक रोटी सेकने का प्रयास किया था, वह यह देखना भूल गए उन्ही मोदी जी को अरब के पांच देशों ने, जो कि मुस्लिम देश हैं, अपने-अपने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित कर स्वयं को सम्मानित महसूस किया है।

मोदी जी ने अपने 23 वर्षों के शासनकाल के दौरान शासन प्रमुख की भूमिका में कभी भी धर्म, जाति, वर्ग, रंग, भाषा, क्षेत्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया बल्कि इंसाफ, इंसानियत और विकास की राजनीति करी। तभी तो विकसित भारत के निर्माण के महायज्ञ में आहुति देने के लिए भीषण गर्मी के दौर में भी भारत के मतदाताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और मतदाताओं के उत्साह, निर्णय को साफ बता रहा था, मतदाता अपने वोट की कीमत समझ चुके हैं, उन्हें 10 वर्षों में समझ में आ गया है वोट अगर सही जगह पड़ता है तो विकास होता है और अगर गलत जगह पड़ता है तो विनाश होता है। अब इस देश में राम भक्तों को गोली नहीं खानी पड़ती, राम भक्तों पर कोई गोली नहीं चला सकता, श्रद्धालुओं पर अब पुष्प- वर्षा होती है। मोदी जी के राज में देश विकास की नई कहानी लिख रहा है। चुनाव ने भ्रष्टाचारियों को जेल और राष्ट्र भक्तों को नेतृत्व का निर्णय कर दिया है। कांग्रेस देश को रिवर्स गियर में ले जाना चाहती है मोदी जी देश को आगे बढ़ाने के लिए रात दिन मेहनत कर रहे हैं। इसीलिए यह चुनाव परिणाम दिख रहा है।

निश्चित रूप से चुनाव संतुष्टीकरण व तुष्टीकरण के बीच का रहा।

चाइनीस गारंटी और मोदी की गारंटी के बीच का रहा। इतने सबके बाद भी मोदी जी की गारंटी है कि अभी तक जो विकास कार्य हुए हैं वो तो ट्रेलर है- पूरी पिक्चर बाकी है। इस कार्यकाल में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश निश्चित ही नए आयाम स्थापित करेगा।

मोदी जी ने 23 वर्षों के शासनकाल में जातिवाद, परिवारवाद व क्षेत्रवाद की जगह विकासवाद और रिपोर्ट कार्ड की राजनीति की, जिसके कारण विपक्ष को शुतुरमुर्ग की तरह मुंह छुपा कर बैठना पड़ा और राजनीति के मैदान में स्वयं को असहाय, अयोग्य मानकर चुनाव शुरू होने के पहले ही हार स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 2024 की जीत साधारण जीत नहीं है। यह असाधारण जीत नई कहानी लिखेगी। विरासत, संस्कृति और विकास नए भारत का निर्माण करेंगे। मां भारती को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करने का प्रयास करेंगे। भविष्य की पीढ़ियों को उन्नत, सुरक्षित, स्वस्थ, आत्मनिर्भर, विकसित भारत सौंप कर, नए भारत के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे। ▪

तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा- पीएम मोदी

- एनडीए की लगातार तीसरी बार सरकार बननी तय है। विजय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है।
- हम सभी जनता-जनार्दन के बहुत आभारी हैं। देशवासियों ने भाजपा पर, एनडीए पर पूर्ण विश्वास जताया है।
- हमारे विरोधी एकजुट होकर भी उतनी सीटें नहीं जीत पाए, जितनी इस लोकसभा चुनाव में अकेले भाजपा ने जीती है।
- तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा और ये मोदी की गारंटी है।

करीब 100 करोड़ मतदाता...11 लाख पोलिंग स्टेशन...डेढ़ करोड़ मतदान कर्मी...55 लाख वोटिंग मशीनें...हर कर्मचारी ने इतनी प्रचंड गर्मी में अपने दायित्व को बखूबी निभाया...

हमारे सुरक्षा कर्मियों ने अपने कर्तव्य भाव का शानदार परिचय दिया... भारत के चुनाव प्रोसेस...चुनाव के इस पूरे सिस्टम और चुनाव प्रक्रिया की क्रेडिबिलिटी पर हर भारतीय को गर्व है।

एनडीए की लगातार तीसरी बार सरकार बनी। हम सभी जनता-जनार्दन के बहुत-बहुत आभारी हैं। देशवासियों ने भाजपा पर, एनडीए पर पूर्ण विश्वास जताया है। ये विजय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है। ये भारत के संविधान पर अटूट निष्ठा की जीत है। ये विकसित भारत के प्रण की जीत है। ये सबका साथ-सबका विकास के मंत्र की जीत है। ये 140 करोड़ भारतीयों की जीत है।

मैं देश के चुनाव आयोग का भी अभिनंदन करूंगा। चुनाव आयोग ने दुनिया का सबसे बड़ा चुनाव इतनी कुशलता के साथ संपन्न कराया। करीब 100 करोड़ मतदाता...11 लाख पोलिंग स्टेशन...डेढ़ करोड़ मतदान कर्मी...55 लाख वोटिंग मशीनें...हर कर्मचारी ने इतनी प्रचंड गर्मी में अपने दायित्व को बखूबी निभाया...हमारे सुरक्षा कर्मियों ने अपने कर्तव्य भाव का शानदार परिचय दिया...भारत के चुनाव प्रोसेस...चुनाव के इस पूरे सिस्टम और चुनाव प्रक्रिया की क्रेडिबिलिटी पर हर भारतीय को गर्व है। इस स्केल पर चुनाव का... इस efficiency के साथ चुनाव का दुनिया में कहीं कोई उदाहरण नहीं है। मैं देशवासियों को कहूंगा, मैं influencers को कहूंगा और मैं opinion makers को कहूंगा कि भारत की लोकतंत्र में ये चुनावी प्रक्रिया की ताकत है, efficiency है। ये अपने आप में बहुत गौरव का विषय है और भारत की पहचान को चार चांद लगाने वाली बात है। और ऐसे जो भी लोग

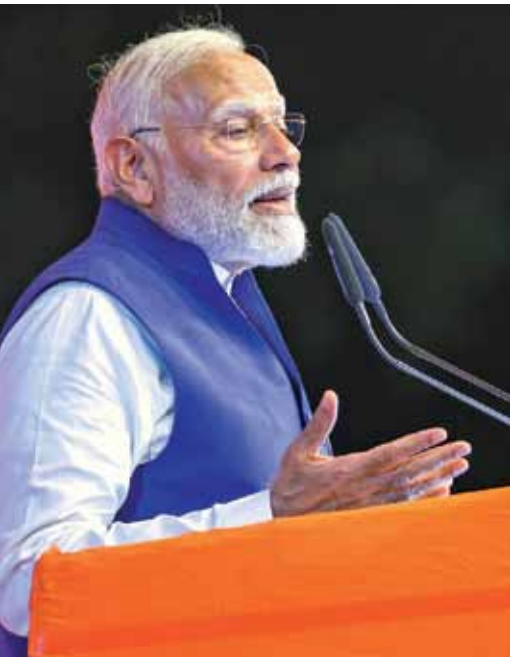

हैं जो दुनिया में अपनी बात पहुंचा सकते हैं, उन सबसे मैं आग्रह करूंगा कि भारत के लोकतंत्र के इस सामर्थ्य को विश्व में हमें बड़े गर्व के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

इस बार भी भारत में जितने लोगों ने मतदान किया...वो अनेक बड़े लोकतांत्रिक देशों की कुल आबादी से भी कहीं ज्यादा है। जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं ने इस चुनाव में रिकॉर्ड वोटिंग कर अभूतपूर्व उत्साह दिखाया है। और दुनिया भर में भारत को बदनाम करने वाली जो ताकतें हैं उनको आइना दिखा दिया है। मैं देश के हर मतदाता को, जनता जनार्दन को विजय के इस पावन पर्व पर आदरपूर्वक नमन करता हूं। मैं देशभर के सभी दलों, सभी उम्मीदवारों का भी अभिनंदन करता हूं...सभी की सक्रिय भागीदारी के बिना लोकतंत्र की ये विराट सफलता संभव नहीं थी। भाजपा के, NDA के हर कार्यकर्ता साथी को भी मेरा आभार !

इस चुनाव के, इस जनादेश के कई पहलू हैं। 1962 के बाद पहली बार कोई सरकार अपने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद तीसरी बार वापस आई है। राज्यों में जहां भी विधानसभा के चुनाव हुए, वहां पर NDA को भव्य विजय मिली है, चाहे वो अरुणाचल प्रदेश हो, आंध्र प्रदेश हो, ओडिशा हो या फिर सिक्किम। इन राज्यों में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। मेरे पास डिटेल तो नहीं है, लेकिन शायद उनको जमानत बचाना भी मुश्किल हो गया होगा। बीजेपी, ओडिशा में सरकार बनाने जा रही है और लोकसभा चुनाव में भी उसने वहां बेहतरीन प्रदर्शन किया है। ये पहली बार होगा, जब महाप्रभु जगन्नाथ की धरती पर बीजेपी का मुख्यमंत्री होगा। बीजेपी ने केरल में भी सीट जीती है। हमारे केरल के कार्यकर्ताओं ने बहुत बलिदान दिए हैं, कई पीढ़ियों तक वे संघर्ष भी करते रहे और जनसामान्य की सेवा भी करते रहे और पीढ़ियों से जिस क्षण का इंतजार किया, वो आज सफलता को चूमने लगी है। तेलंगाना में हमारी संख्या दो गुनी हुई है। मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, दिल्ली, उत्तराखंड, हिमाचल जैसे कई राज्यों में हमारी पार्टी ने लगभग क्लीन स्वीप किया है। इन सभी राज्यों और अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और सिक्किम विधानसभा के मतदाताओं का भी विशेष आभार व्यक्त करता हूं। इन राज्यों की जनता को विश्वास दिलाता हूं कि केंद्र सरकार आपके विकास के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेगी। आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू जी के नेतृत्व में NDA ने शानदार प्रदर्शन किया है। बिहार में नीतीश बाबू के नेतृत्व में भी NDA ने शानदार प्रदर्शन किया है।

10 वर्ष पहले देश ने बदलाव के लिए जनादेश दिया था। तब ये वो समय था जब देश निराशा के गर्त में डूब चुका था। 2013-14 का कालखंड देखिए। देश निराशा की गर्त में डूब चुका था। फ्रेजाइल फाइव जैसे शब्दों से हमें नवाजा जाता था, हर दिन अखबारों की हेडलाइन घोटालों की खबरों से भरी रहती थी, देश की युवा पीढ़ी अपने भविष्य के प्रति आशंकित हो गई थी। ऐसे समय देश ने हमें निराशा के गहरे सागर से आशा के मोती निकालने का जिम्मा सौंपा था। हम सभी ने पूरी ईमानदारी से प्रयास किया, काम किया। 2019 में इसी प्रयास पर विश्वास व्यक्त करते हुए देश ने दोबारा प्रचंड जनादेश दिया। इसके बाद NDA का दूसरा कार्यकाल विकास और विरासत की गारंटी बन गया। 2024 में इसी गारंटी के साथ...हम जन-जन का आशीर्वाद लेने देश के कोने-कोने में गए। तीसरी बार जो आशीर्वाद NDA को मिला है, इसके लिए जनता-जनार्दन के सामने विनय भाव से नतमस्तक हूं।

यह पल, निजी तौर पर मेरे लिए भी भावुक करने वाला पल है। मेरी मां के जाने के बाद ये मेरा पहला चुनाव था। लेकिन सच मानिए... देश की कोटि-कोटि माताओं-बहनों-बेटियों ने मां की कमी मुझे खलने नहीं दी। मैं पूरे देश में जहां-जहां भी गया...माताओं-बहनों-बेटियों ने अभूतपूर्व स्नेह और आशीर्वाद दिया। ये आंकड़ों में नहीं दिख सकता है। देश के इतिहास में महिलाओं द्वारा वोटिंग के सारे रिकॉर्ड टूट गए। इस प्यार, इस अपनेपन को मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता...ये मेरे भावों में है, ये मेरे मन-मस्तिष्क के कोने-कोने में रचा-बसा हुआ है। देश की कोटि-कोटि माताओं-बहनों ने मुझे नई प्रेरणा दी है।

पिछले 10 साल में देश ने बहुत बड़े फैसले लिए हैं। राष्ट्र प्रथम की भावना हमें असामान्य लक्ष्य हासिल करने का हौसला देती है। ये हम में कुछ कर गुजरने की इच्छा शक्ति उत्पन्न करती है। हमने दुनिया की सबसे बड़ी जन कल्याणकारी योजनाएं चलाईं...आजादी के 70 साल बाद 12 करोड़ लोगों को नल से जल मिला...आजादी के 70 साल बाद 4 करोड़ गरीबों को पक्के घर मिले...देश के 80 करोड़ जरूरतमंदों को मुफ्त राशन की सुविधा मिली...करोड़ों गरीबों को 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा मिली...राष्ट्र प्रथम की इसी भावना की वजह से जम्मू कश्मीर से 370 हटी...जीएसटी और IBC जैसे रीफॉर्म हुए...बैंकिंग रिफॉर्म हुए...हमने राष्ट्र हित को हमेशा सबसे आगे रखा। आप याद करिए... कोरोना का इतना बड़ा संकट आया। हमने वही फैसला लिया, जो देशहित में था...जनहित में था। हमने हर दबाव से अलग हटकर कदम उठाया। और इसी का नतीजा है- आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से विकसित होती बड़ी इकॉनॉमी है। राष्ट्र प्रथम की यही भावना भारत को आत्मनिर्भर बनाएगी...

हमारे सामने एक महान संकल्प है-विकसित भारत का संकल्प...10 साल के बाद, लगातार तीसरी बार जनता जनार्दन का प्यार...उनका आशीर्वाद...हमारा हौसला बढ़ाता है...हमारे संकल्प को नई मजबूती देता है...नई ऊर्जा देता है। हमारे विरोधी एकजुट होकर भी उतनी सीटें नहीं जीत पाए...जितनी इस लोकसभा चुनाव में अकेले बीजेपी ने जीती है। मैं देश के कोने-कोने में उपस्थित बीजेपी के कार्यकर्ता को कहूंगा...देशवासियों को कहूंगा। आपकी मेहनत, इतनी गर्मी में आपका बहाया पसीना... ये मोदी को निरंतर काम करने की प्रेरणा देता है। मैं देशवासियों को दुबारा दुहराना चाहता हूं। आप 10 घंटे काम करेंगे तो मोदी 18 घंटे काम करेगा। आप दो कदम चलेंगे तो मोदी चार कदम चलेगा। हम भारतीय मिलकर चलेंगे, देश को आगे बढ़ाएंगे...तीसरे कार्यकाल में देश बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा और ये मोदी की गारंटी है।

NDA सरकार की प्रतिबद्धता हमेशा ही समाज के हर क्षेत्र और हर वर्ग के विकास की रही है। बीते 10 वर्षों में हमने 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। इसमें एक बड़ी संख्या SC-ST-OBC की है। हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक गरीबी देश के अतीत का हिस्सा ना हो जाए। वूमन लेड डेवलपमेंट,

हमारी सरकार के गवर्नेंस मॉडल के केंद्र में रहा है। स्पोर्ट्स से स्पेस और एंटरप्रेन्योरशिप तक... हम हर क्षेत्र में माताओं-बहनों-बेटियों को नए अवसर देने के लिए काम करेंगे। बीते 10 वर्षों में आपने देखा है...हमने मेडिकल कॉलेज की संख्या दोगुनी की है...एम्स की संख्या तीन गुनी की है...स्वरोजगार और स्टार्टअप में ऐतिहासिक बढ़ोत्तरी हुई है...हमने भारत को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल मैनुफैक्चरर बनाया है...अब इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर और ऐसे नए सेक्टर्स में और तेजी से काम किया जाएगा। हमने देश के डिफेंस प्रोडक्शन और एक्सपोर्ट को बढ़ाने के प्रयास किए हैं। हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक देश का डिफेंस सेक्टर आत्मनिर्भर नहीं बन जाता। हम अपने युवाओं को शिक्षा, रोजगार-स्वरोजगार हर क्षेत्र में सशक्त करते रहेंगे। किसानों के लिए बीज से बाजार तक आधुनिक नीतियों को बनाने का काम और प्राथमिकता पर होगा। दलहन से लेकर खाद्य तेल तक, हम हमारे किसानों को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करते रहेंगे। आने वाला समय Green Era- हरित युग का है। आज भी हमारी सरकार की नीतियां-प्रगति-प्रकृति और संस्कृति के समागम की हैं। हम Green Industrialisation पर निवेश बढ़ाएंगे। ग्रीन एनर्जी हो या फिर ग्रीन मोबिलिटी...हम भारत को सबसे आगे ले जाएंगे। भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनॉमी बनाने के लिए NDA सरकार पूरी शक्ति से काम करेगी।

आज का भारत...वैश्विक समाधान का हिस्सा भी बन रहा है। हमने कोरोना के दौरान देखा है कि कैसे भारत की वैक्सीन कैपेसिटी ने दुनिया को संकट से बचाने में मदद की। हमारे चंद्रयान ने चंद्रमा के साउथ पोल पर लैंडिंग करके, space exploration के नए रास्ते खोले हैं। क्लाइमेट चेंज से लेकर फूड सेक्योरिटी तक जो भी विषय दुनिया के सामने हैं...भारत उनके लिए काम करना अपनी जिम्मेदारी समझता है। भारत, ग्लोबल सप्लाई चेन को stability और diversity देना भी अपना दायित्व समझता है। इसलिए भारत आज विश्वबंधु के रूप में सबको गले लगा रहा है। मुझे विश्वास है, मजबूत भारत, मजबूत दुनिया का एक मजबूत स्तंभ सिद्ध होगा।

21वीं सदी के भारत को आगे बढ़ना है तो उसे करप्शन पर भी लगातार तेज प्रहार करना ही होगा। डिजिटल इंडिया और टेक्नोलॉजी ने करप्शन के अनेक रास्ते बंद किए हैं। लेकिन ये भी सच है कि करप्शन के खिलाफ लड़ाई, दिनों-दिन कठिन हो रही है। राजनीतिक स्वार्थ के लिए जब करप्शन का महिमामंडन शुरु हो जाए, और इसमें निर्लज्जता की सारी हदें पार हो जाएं, तब करप्शन को बहुत ताकत मिल जाती है। इसलिए, तीसरे कार्यकाल में NDA सरकार का बहुत ज्यादा जोर, हर तरह के करप्शन को जड़ से उखाड़ फेंकने का होगा।

भाजपा के हर कार्यकर्ता के लिए हमेशा से, दल से बड़ा देश रहा है। सेवाभाव से बड़ी राजनीति कोई नहीं हो सकती। इसलिए हमें सेवाभाव को सर्वोपरि रखने कि परंपरा को निरंतर मजबूत करना है। भाजपा का कार्यकर्ता जन आकांक्षाओं, जन-भावनाओं और जन-अपेक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इसको हमें कभी नहीं भूलना है। जरूरी है कि समाज के हर वर्ग से और हर व्यक्ति से हम निरंतर संवाद करते रहें।

कुछ ही दिनों में देश छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350वीं वर्षगांठ मनाएगा। उनका जीवन अपने आप में इस बात की प्रेरणा है कि ध्येय पथ पर अडिग कैसे रहा जाता है। अपने ध्येय पथ में भी...हमारी मेहनत में कोई कमी ना रहे...हम पूरी निष्ठा से, पूरी ईमानदारी से देश की सेवा करते रहें...हमारे जीवन की ये बहुत बड़ी कसौटी होनी चाहिए। हम सभी मिलकर देश के लिए काम करें...हम देशहित को सर्वोपरि रखें... तभी हम अपने लक्ष्यों को हासिल कर पाएंगे। हमारा संविधान हमारी Guiding Light है। इसी साल हमारे संविधान के 75 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। केंद्र की NDA सरकार, सभी राज्य सरकारों के साथ, चाहें वो किसी भी दल की क्यों ना हों...मिलकर काम करेगी। विकसित भारत के लक्ष्य के लिए हम खूब मेहनत करेंगे...जमकर मेहनत करेंगे...हमारे पास रुकने का, थमने का समय नहीं है। ये राष्ट्रनीति के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ने का समय है। विकसित भारत के हमें निरंतर बड़े फैसले लेने हैं, भारत के उज्जवल भविष्य के लिए उत्तम फैसले भी लेने हैं। छह दशक के बाद, देश के मतदाताओं ने एक नया इतिहास रचा है। छह दशक बाद, किसी गठबंधन को...एनडीए को लगातार तीसरी बार देश की सेवा करने का अवसर दिया है। जनता जनार्दन के साथ विश्वास का ये अटूट रिश्ता, ये लोकतंत्र की बहुत बड़ी शक्ति है। आपका आशीर्वाद... नए उत्साह, नए उमंग के साथ काम करने की हमारी ऊर्जा है।

मैं हमारे अध्यक्ष श्रीमान नड्डा जी और संगठन की केंद्र की टीम, संगठन के राज्यों की टीम, जिले की टीम, मंडल की टीम, बूथ लेवल की कमेटी हो या पन्ना प्रमुख, नड्डा जी के नेतृत्व में अनेक चुनौतियों के बीच, जिस हिम्मत के साथ, जिस समर्पण भाव से, राष्ट्र प्रथम के मंत्र को जीते हुए, इस चुनावी जंग में एनडीए को विजय दिलाई है। वे सब के सब अनेक-अनेक अभिनंदन के पात्र हैं। देशवासियों ने मुझ पर बहुत बड़ी कृपा की है। भारतीय जनता पार्टी पर बहुत बड़ी कृपा की है। एनडीए पर बहुत बड़ी कृपा की है। मैं 140 करोड़ देशवासियों का पुनः आभार व्यक्त करता हूं। मैं हमारे एनडीए के सभी साथियों का भी हृदय से अभिनंदन करता हूं। मैं इस देश के महान लोकतंत्र को, महान संविधान को फिर श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। ▪

जीत कार्यकर्ताओं के परिश्रम का प्रतिफल- अमित शाह

एनडीए की यह जीत, बीते 10 सालों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जिस तरह देश के गरीबों, महिलाओं, पिछड़ों, वंचितों और युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए पुरुषार्थ किया है, उसके लिए जनता का आशीर्वाद मिला है।

- मोदी जी के नेतृत्व में NDA को लगातार तीसरी बार सेवा का मौका देने के लिए जनता को नमन
- लगातार तीसरी जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जनता का विश्वास सिर्फ और सिर्फ मोदी जी के साथ है
- देश के लिए अपना जीवन खपा देने वाले मोदी जी में जन-जन के अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है यह विजय
- भाजपा को तीसरी बार मिली यह जीत हमारे कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का प्रतिफल है
- नया भारत इस जनादेश के साथ विकास यात्रा को और गति और शक्ति देने के लिए तैयार है

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए को लगातार तीसरी बार सेवा का मौका देने के लिए देश की जनता को कोटि-कोटि नमन करता हूँ। लगातार तीसरी जीत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जनता का विश्वास सिर्फ और सिर्फ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ है।

एनडीए की यह विजय, देश के लिए अपना जीवन खपा देने वाले नेता आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी में जन-जन के अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ''विकसित भारत'' के विजन पर जनता-जनार्दन का विश्वास मत है। यह जन आशीर्वाद आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के बीते एक दशक के गरीब कल्याण, विरासतों के पुनरोत्थान, महिलाओं के स्वाभिमान और किसान कल्याण के कार्यों की सफलता का आशीष है। नया भारत इस जनादेश के साथ 'विकास यात्रा' को और गति और शक्ति देने के लिए तैयार है।

एनडीए की यह जीत, बीते 10 सालों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जिस तरह देश के गरीबों, महिलाओं, पिछड़ों, वंचितों और युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए पुरुषार्थ किया है, उसके लिए जनता का आशीर्वाद मिला है। इस जीत के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई देता हूँ। यह विजय, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उस अविराम साधना का प्रतिफल है, जो किसी भी कीमत पर रुकना नहीं जानती है। बीते 23 सालों के सार्वजनिक जीवन में बिना एक दिन भी छुट्टी लिए, बिना अपनी परवाह किये, दिन-रात केवल देश और देशवासियों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहने का है, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मैराथन प्रयास की यह जीत है।

भाजपा को तीसरी बार मिली यह जीत हमारे कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। इस जीत के लिए भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी और देश के हर भू-भाग में मेहनत करने वाले सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को मैं बधाई देता हूँ। भाजपा के लिए उनके कार्यकर्ता ही सबसे बड़ी पूँजी हैं। सभी कार्यकर्ताओं ने जिस परिश्रम से उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक गली-गली, घर-घर जाकर आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लिए जनता का आशीर्वाद माँगा है, वह सचमुच सराहनीय है। ▪

एनडीए का यह कार्यकाल बड़े फैसलों और तेज विकास के लिए है-पीएम मोदी

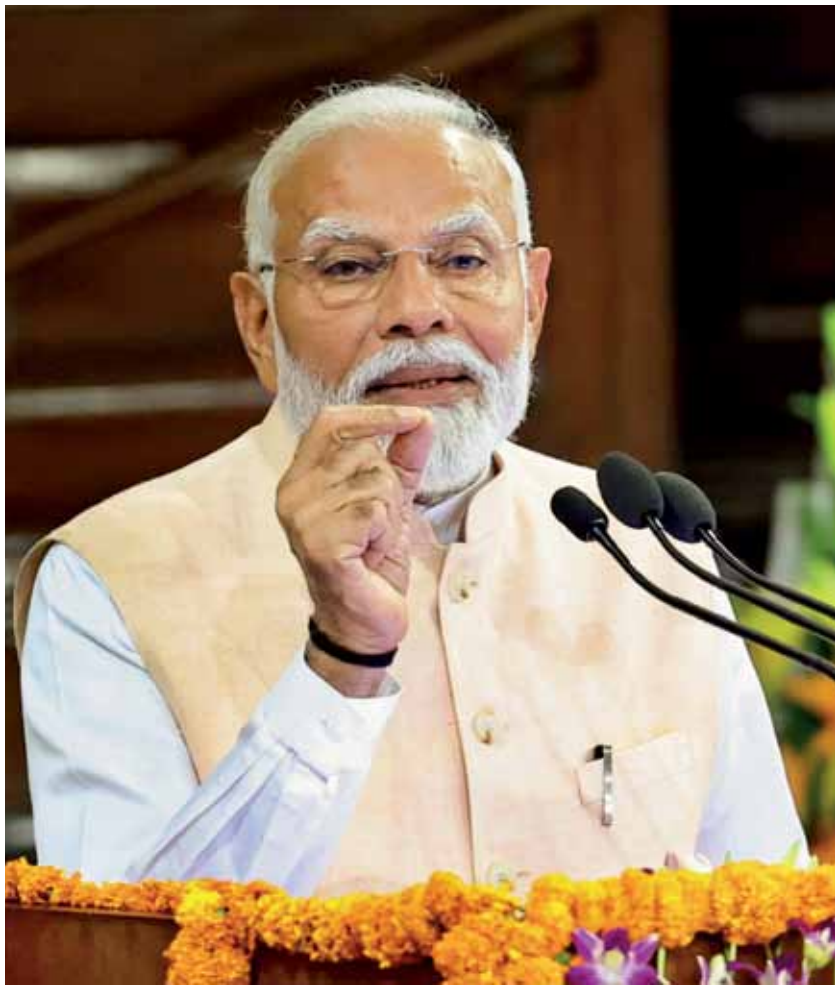

- **हमारा ये गठबंधन सच्चे अर्थ में भारत की आत्मा है।**
- **एनडीए ने हमेशा करप्शन-फ्री स्थिर सरकार देश को दी है।**
- **हम सर्वमत का निरंतर प्रयास करेंगे और देश को आगे ले जाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे।**
- **दक्षिण भारत में एनडीए ने एक नई राजनीति की नींव मजबूत की है। विजय की गोद में उन्माद पैदा नहीं होता है। पराजित लोगों के प्रति उपहास हमारे संस्कार नहीं हैं।**

देश ने एनडीए के, गरीब कल्याण के, गुड गवर्नेंस के 10 साल को देखा है। इतना ही नहीं है मैं कह सकता हूं- देश ने इसे जिया है। जनता-जनार्दन ने सरकार क्या होती है, सरकार क्यों होती है, सरकार किसके लिए होती है, सरकार कैसे काम करती है इसको पहली बार अनुभव किया है।

वरना जनता और सरकारों के बीच में खाई की व्यवस्था ही बनी हुई थी । हमने उसको पाट दिया है। हमने सबका प्रयास का मंत्र देश को नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए चरितार्थ करके देखा है।

मेरा बहुत सौभाग्य है कि एनडीए के नेता के रूप में आप सब साथियों ने सर्वसम्मति से चुनकर के मुझे एक नया दायित्व दिया है और इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। व्यक्तिगत जीवन में एक मैं जवाबदारी का अहसास करता हूं जब 2019 में इस सदन में मैं बोल रहा था आप सबने मुझे नेता के रूप में चुना था और तब मैंने एक बात पर बल दिया था- 'विश्वास', आज जब आप मुझे फिर से एक बार ये दायित्व देते हैं इसका मतलब है कि हम दोनों के बीच आपस में विश्वास का सेतु इतना मजबूत है। ये अटूट रिश्ता विश्वास की मजबूत धरातल पर है और ये सबसे बड़ी पूंजी होती है और इसलिए ये पल मेरे लिए भावुक करने वाले भी हैं और आप सबके प्रति जितना धन्यवाद करूं उतना कम है।

बहुत कम लोग इन बातों की चर्चा करते हैं शायद उनको सूट नहीं करता होगा लेकिन हिंदुस्तान के इतने महान लोकतंत्र की ताकत देखिए कि एनडीए आज देश में 22 राज्यों में लोगों ने उनको सरकार बनाकर के सेवा करने का मौका दिया है। हमारा ये अलायंस सच्चे अर्थ में भारत की असली जो स्पिरिट है जो भारत की आत्मा है भारत की जड़ों में जो रचा-बसा है उसका एक अर्थ में प्रतिबिंब है और मैं इसलिए कह रहा हूं कि थोड़ी नजर करें हमारे देश में 10 ऐसे राज्य जहां हमारे आदिवासी बंधुओं की संख्या प्रभावी रूप से

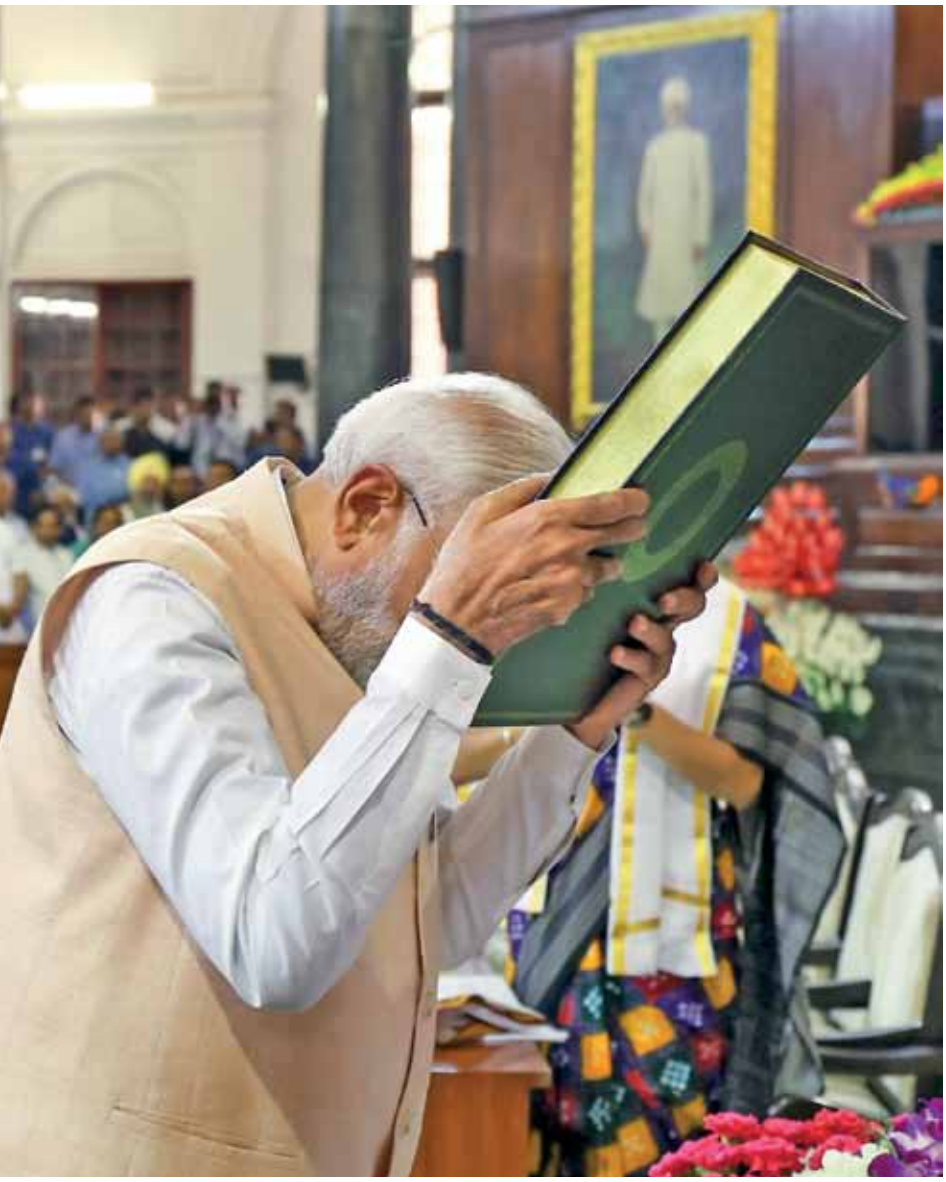

है, निर्णायक रूप से है। जहां आदिवासियों की आबादी ज्यादा है ऐसे 10 राज्यों में से 7 राज्यों में एनडीए सेवा कर रहा है।

हम सर्वपंथ समभाव के हमारे संविधान को समर्पित है और देश में चाहे हमारा गोवा हो या हमारा नॉर्थ ईस्ट हो जहां बहुत बड़ी मात्रा में हमारे ईसाई भाई-बहन रहते हैं आज उन राज्यों में भी एनडीए के रूप में सेवा का अवसर हमें मिला हुआ है।

प्री-पोल अलायंस हिंदुस्तान के राजनीतिक इतिहास में और हिंदुस्तान की राजनीति में गठबंधन के इतिहास में प्री-पोल अलायंस इतना सफल कभी भी नहीं हुआ है जितना की एनडीए हुआ है और ये गठबंधन का विजय हमने बहुमत हासिल किया है और कई बार मैं कह चुका हूं शब्द अलग होंगे लेकिन मेरे भाव उसमें एक सातत्य है। सरकार चलाने के लिए बहुमत आवश्यक है लोकतंत्र का वो ही एक सिद्धांत है लेकिन देश चलाने के लिए सर्वमत बहुत जरूरी होता है और देशवासियों को मैं यहां से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपने जिस प्रकार से हमें बहुमत देकर के सरकार चलाने का सौभाग्य दिया है ये हम सबका दायित्व है कि हम सर्वमत का निरंतर प्रयास करेंगे और देश को आगे ले जाने के लिए हम कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे।

एनडीए को करीब-करीब 3 दशक हो चुके हैं यानी कि आजादी के 75 साल में 3 दशक एनडीए ये सामान्य घटना नहीं है। विविधता से भरे हुए अपने लोकतांत्रिक और सामाजिक रचना के बीच में ये 3 दशक की यात्रा ये एक बहुत बड़ी मजबूती का संदेश देती है और आज मैं बड़े गर्व के साथ कहता हूं कि एक समय वो था कि संगठन के कार्यकर्ता के रूप में इस अलायंस का हिस्सा था, व्यवस्थाओं से जुड़ा रहता था और आज सदन में बैठ करके आपके साथ काम करते-करते मेरा भी नाता इससे 30 सालों का रहा है और मैं कह सकता हूं हकीकत, तथ्यों के आधार पर कह सकता हूं ये सबसे सफल अलायंस है। हम गर्व से कह सकते हैं कि 5 साल का टर्म होता है इस अलायंस ने 30 साल में से 5-5 साल के तीन टर्म सफलतापूर्वक पार किए हैं और अलायंस चौथे टर्म में एंटर कर रहा है।

इस बात को जो राजनीति के विशेषज्ञ हैं अगर मुक्त मन से, मुक्त मन शब्द बहुत महत्ता है वे सोचेंगे तो पाएंगे कि एनडीए सत्ता प्राप्त करने का या सरकार चलाने का कुछ दलों का जमावड़ा नहीं है, ये राष्ट्र प्रथम की मूल भावना से नेशन फर्स्ट के प्रति कमिटेड वैसा ये समूह है और 30 साल का लंबा कालखंड शुरू में शायद असेंबल हुआ होगा लेकिन आज मैं कह सकता हूं कि भारत की राजनीति व्यवस्था में एक ऑर्गेनिक अलायंस है और ये मूल्य स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी, श्री प्रकाश सिंह जी बादल, श्री बाला साहेब ठाकरे, श्री जॉर्ज फर्नांडिस, श्री शरद यादव, अनगिनत नाम में कह सकता हूं इन लोगों ने जिस बीज को बोया था वो आज भारत की इस जनता ने विश्वास का सिंचन कर-करके इस बीज को वटवृक्ष बना दिया है और हम सबके पास ऐसे महान नेताओं की विरासत है और हमें इसका गर्व है। बीते 10 वर्षों में हमने एनडीए की उसी विरासत, उसी मूल्यों को लेकर के निरंतर आगे बढ़ने का और देश को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जैसा मैंने कहा मुक्त मन से राजनीति के विश्लेषक अगर विश्लेषण करेंगे तो देखेंगे कि एनडीए के ये जो लोग दिखते हैं ना उसमें कॉमन चीज नजर आती है और वो है गुड गवर्नेंस। इन सबने अपने-अपने समय में, अपने-अपने कार्यकाल में जब-जब जहां सेवा करने का मौका मिला है गुड गवर्नेंस इस देश को दिया है और इस प्रकार से एनडीए एक प्रकार से एनडीए कहते ही गुड गवर्नेंस ये अपने आप पर्यायवाची बन जाता है।

हम लोगों के सभी के कार्यकाल में चाहे मैं गुजरात में रहा हूं ,चाहे बाबू हमारे आंध्र में रहे हो या नीतीश जी ने बिहार के लिए भरपूर सेवा की। हम सबके अंदर केंद्र बिंदु में गरीब का कल्याण केंद्रस्थ रहा है और देश ने एनडीए

के, गरीब कल्याण के, गुड गवर्नेंस के 10 साल को देखा है। इतना ही नहीं है मैं कह सकता हूं- देश ने इसे जिया है। जनता-जनार्दन ने सरकार क्या होती है, सरकार क्यों होती है, सरकार किसके लिए होती है, सरकार कैसे काम करती है इसको पहली बार अनुभव किया है। वरना जनता और सरकारों के बीच में खाई की व्यवस्था ही बनी हुई थी । हमने उसको पाट दिया है। हमने सबका प्रयास का मंत्र देश को नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए चरितार्थ करके देखा है।

एनडीए सरकार में हम अगले 10 साल में मैं बहुत जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं, अगले 10 साल में गुड गवर्नेंस, विकास, नागरिकों के जीवन में क्वालिटी ऑफ लाइफ और मेरा व्यक्तिगत रूप से एक बहुत बड़ा ड्रीम है, मैं लोकतंत्र की समृद्धि को जब सोचता हूं तो मैं चाहता हूं कि सामान्य मानवी के जीवन में से और खासकर के मध्यम वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग उनके जीवन में से सरकार की दखल जितनी कम हो उतनी लोकतंत्र की मजबूती है और आज के टेक्नोलॉजी के युग में बहुत आसानी से हम वरना एक दिन में 10 काम हो तो 10 अलग-अलग वो सारी चीजें मांगेंगे। हम बदलाव चाहते हैं। गुड गवर्नेंस का ये भी एक महत्वपूर्ण पहलू है हम विकास का नया अध्याय लिखेंगे, गुड गवर्नेंस का नया अध्याय लिखेंगे, जनता- जनार्दन की भागीदारी का नया अध्याय लिखेंगे और सब मिल करके विकसित भारत के सपने को साकार करके रहेंगे।

एनडीए में और मैं अगर विस्तार से कहूं तो सदन में किसी भी दल का कोई भी जन प्रतिनिधि होगा मेरे लिए सब बराबर है जब मैं सबका प्रयास की बात करता हूं तो मैं सदन में भी चाहे वो लोकसभा हो या राज्यसभा हमारे लिए सब बराबर है और ये ही एक भाव है जिसके कारण 30 साल से एनडीए अलायंस मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है। अपना-पराया कुछ नहीं है। सबको गले लगाने में हमने कभी कोई कमी नहीं रखी है उसी का परिणाम है कि जनता का विश्वास भी जीत पाते हैं।

हमने 2024 में जिस टीम भावना से काम किया है और ग्रास रूट लेवल पर किया है सिर्फ फोटो ऑप नेता मिल करके हाथ हिलाएं और तुम- तुम्हारे रास्ते मैं-मेरे, ऐसा नहीं है ग्रास रूट लेवल तक सबने मिल करके ये जो काम किया है और उसी ने हमें ऑर्गेनिक अलायंस का सामर्थ्य दिया है। एक- दूसरे का सहयोग किया है, हर किसी ने यही सोचा जहां कम- वहां हम। अगर कोई कमी है तो मैं आऊंगा, मैं मेहनत करूंगा लेकिन तुम्हें कमी नहीं रहने दूंगा जहां कम- वहां हम यह हर कार्यकर्ता ने जी करके

दिखाया है और तभी तो जीत आती है।

कभी-कभी मैं कह सकता हूं कि हमारा 10 साल का अनुभव है, भारत के हर क्षेत्र का और भारत के हर नागरिक का जो एस्पिरेशंस हैं, रीजनल एस्पिरेशंस हैं वे और नेशनल एस्पिरेशंस इसका एक अटूट नाता होना चाहिए, इसके बीच में हवा तक गुजर ना सके इतना जुड़ाव होना चाहिए तब देश आगे बढ़ेगा।

इस चुनाव में मैं कुछ उल्लेख जरूर करना चाहूंगा जो मेरी नजरिए से मैंने देखा है। दक्षिण भारत में एनडीए ने एक नई राजनीति की नींव मजबूत की है अब देखिए कर्नाटक एंड तेलंगाना। अभी- अभी तो इनकी सरकारें बनी थीं लेकिन पल भर में ही लोगों का विश्वास टूट गया, भ्रम से लोग बाहर आ गए और एनडीए को गले लगा लिया। कर्नाटक और तेलंगाना में दोनों जगह।

तमिलनाडु में, मैं तमिलनाडु की टीम को भी बधाई देना चाहूंगा और वहां हमारा एनडीए समूह बहुत बड़ा भी है और कईयों को पता था हम शायद एक सीट नहीं ला पाएंगे लेकिन इस लड़ाई में हम साथ रहेंगे और मैंने बहुत से एनडीए के साथी तमिलनाडु में ऐसे हैं कि जिनका कोई उम्मीदवार नहीं था लेकिन इस झंडे को ऊंचा रखने के लिए वो जी जान से जुटे रहे और इसलिए आज तमिलनाडु में भले हम सीट नहीं जीत पाए लेकिन जिस तेजी से एनडीए का वोट शेयर बढ़ा है वो साफ-साफ संदेश दे रहा है कल में क्या लिखा हुआ है?

पुडुचेरी हो, केरल हो.. केरल हमारे सैकड़ों कार्यकर्ताओं के बलिदान, यूडीएफ हो या एलडीएफ हो शायद हिंदुस्तान के राजनीतिक जीवन में इतना जुल्म एक विचारधारा को लेकर के जीने वाले लोगों पर हुआ होगा तो सिर्फ मैं कह सकता हूं केरल में हुआ होगा, जम्मू- कश्मीर से भी ज्यादा हुआ है उसके बावजूद भी सामने कहीं विजय नजर नहीं आता था। उन्होंने परिश्रम की पराकाष्ठा में कभी पीछे नहीं रहे। पीढ़ियां खपा दी, पीढ़ियां खपा दी और आज पहली बार संसद में केरल से हमारा प्रतिनिधि बनके आया है।

अरुणाचल में लगातार हमारी सरकार बनती रही है और भारी समर्थन से बनती है। सिक्किम में भी हमारे एनडीए की सरकार करीब- करीब क्लीन स्वीप के साथ, अरुणाचल क्लीन स्वीप, आंध्र मैं बाबू को पूछ रहा था बोले हिस्टोरिकल ये सबसे हाईएस्ट विक्ट्री है और जो यहां दिखता है ना पवन, ये पवन नहीं आंधी है।

आंध्र ने इतना बड़ा हमारे प्रति जनमत दिया है जी हिंदुस्तान के लिए एक सामान्य मानवी की विकास की जो जिजीविषा है उसका प्रतिबिंब है और महाप्रभु जगन्नाथ और मैंने अनुभव किया हमेशा, मैं हमेशा मानता हूं ईश्वर के अनेक रूप होते हैं लेकिन जब मैं भगवान महाप्रभु जगन्नाथ जी को याद करता हूं तो मैं हमेशा मानता हूं ये गरीबों के देवता हैं और वहां जो क्रांति रूप परिणाम आया है मैं एक रिवोल्यूशन देख रहा हूं और मैं इसके साथ कह सकता हूं कि विकसित भारत का हमारा जो सपना है आने वाले 25 वर्ष पहले मैंने 10 साल कहा था यहां मैं 25 साल कह रहा हूं आने वाले 25 साल महाप्रभु जगन्नाथ जी की कृपा से उड़ीसा देश की विकास यात्रा के ग्रोथ इंजन में से एक होगा।

हम लोग 4 जून के नतीजे चल रहे थे मैं तो अपने काम में कुछ व्यस्त था बाद में फोन आना शुरू हो गए तो मैंने किसी को पूछा यार ये तो ठीक है आंकड़े- वाकड़े तो मुझे ये बताओ कि ईवीएम जिंदा है कि मर गया क्योंकि ये लोग तय करके बैठे थे कि भारत के लोकतंत्र और लोकतंत्र की प्रक्रिया के प्रति विश्वास ही लोगों का उठ जाए और लगातार ईवीएम को गाली देना और मुझे तो लगता था शायद इस बार वो ईवीएम की अर्थी जुलूस निकालेंगे। लेकिन चार जून शाम आते- आते उनको ताले लग गए। ईवीएम ने उनको चुप कर दिया ये ताकत है भारत के लोकतंत्र की, ये ताकत है भारत की निष्पक्षता की, ये भारत की ताकत है भारत के चुनावी तंत्र की, चुनाव आयोग की और मैं मानता हूं कि ये आशा करता हूं कि पांच साल तो अब ईवीएम शायद मुझे नहीं सुनाई देगा लेकिन जब 2029 में हम जाएंगे तो फिर से शायद ईवीएम को लेकर के नाचने की शुरुआत करेंगे। क्योंकि इनके सुधरने की संभावनाएं बहुत कम है। आप देखिए चुनाव के समय मैंने पहली बार देखा शायद हर तीसरे दिन इलेक्शन कमीशन के काम में रुकावट आए इसके लिए सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे खटखटाए गए, भांति-भांति की एप्लीकेशन और एक ही टोली थी और लोकतंत्र के प्रति जिनका भारी अविश्वास है ऐसे लोग सुप्रीम कोर्ट का उपयोग करते हुए कैसे रुकावट डाले इसका निरंतर प्रयास करते रहे। और चुनाव आयोग की ताकत का एक बड़ा हिस्सा अदालतों में पीक आवर्स में चुनाव के पीक आवर्स में यानी कितनी निराशा लेकर के ये लोग मैदान में आए थे, कि उन्होंने पूरा हमला उसी इंस्टिट्यूट पर लगा दो, ताकि चुनाव के कोई भी परिणाम आए हम दुनिया के सामने भारत को भी बदनाम कर लें, ये षड्यंत्र का हिस्सा था, और कभी भी देश उनको माफ नहीं करेगा।

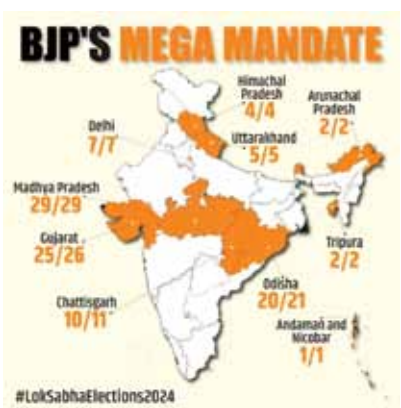

इंडी गठबंधन वाले जब ईवीएम का विरोध करते हैं तो मैं सिर्फ एक चुनाव के रूप में नहीं देख रहा मैं मानता हूं ये लोग मन से पिछली शताब्दी के सोच वाले लोग हैं, वे टेक्नोलॉजी का महत्व ना समझते हैं ना टेक्नोलॉजी स्वीकार करने को तैयार हैं और ये सिर्फ ईवीएम में दिखाई दिया ऐसा नहीं। यूपीआई में दिखाया जब हमने कहा कि हिंदुस्तान के लोग डिजिटल ट्रांजेक्शन करेंगे फिनटेक की दुनिया में आज हिंदुस्तान का नाम हो गया मानने को तैयार नहीं, आधार आज देश की पहचान बना है मैं तो देख रहा हूं कि मुझे कई देश कहते हैं हमें आधार की पद्धति से आगे बढ़ना है आप कैसे मदद कर सकते हैं, उस आधार को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट में बार..बार..बार..बार जाकर के परेशानियां पैदा की यानी मूलतः ये प्रगति के विरोधी, आधुनिकता के विरोधी, टेक्नोलॉजी के विरोधी- इंडी अलायंस हमने देखा है।

इस देश के लिए ये भी चिंता का विषय है कि विश्व में भारत के लोकतंत्र की ताकत को कम आंकने का प्रयास और कितना एक्सट्रीम है मैं दुनिया में ढोल पीट रहा हूं कि हम मदर ऑफ डेमोक्रेसी है और ये दुनिया में जाकर के बता रहे नहीं नहीं हमारे देश में तो डेमोक्रेसी जैसा कुछ नहीं वो मोदी बैठ गया है वो चाय बेचने वाला यहां पहुंच कैसे गया कुछ तो गड़बड़ की होगी ये जो इनकी मनोस्थिति है जी। भारत के नागरिकों को चुनाव प्रक्रिया के प्रति अविश्वास पैदा करने का जो उनका षड्यंत्र है मैं मानता हूं कि अब दुनिया भी भारत के लोकतंत्र की विविधता, विशालता, व्यापकता, गहनता इन सबको भी जानने- समझने के लिए आकर्षित होगी ऐसे इस चुनाव के नतीजे में देख रहा हूं।

जब एक तारीख को मतदान पूरा हुआ और 4 तारीख को काउंटिंग इस बीच की चीजों को आप देखिए योजनाबद्ध तरीके से देश को हिंसा की आग में झोंकने का बयान दिए जाते रहे।

यहां इकटठे होना, यहां पहुंचना, यहां करना, कुछ लोग इस चीज को गंभीर नहीं लेंगे। लेकिन ये बहुत गंभीर है, आप भारत के लोकतंत्र को, पहले उसकी व्यवस्था को अनादर करते हो, अब परिणाम आने से पहले एक ऐसा माहौल बना दो कि बस आग लगा देंगे, हर प्रकार से उन शब्दों का अर्थ यही निकलता है। उन्होंने देश को उस दिशा में ले जाने का प्रयास किया था। लगातार देश को गुमराह करने का प्रयास किया गया, देश के लोगों को बांटने का प्रयास किया। अरे चुनाव एक ऐसा लोकोत्सव होता है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को हम जोड़े, तोड़ने के लिए नहीं होता है। लेकिन हर प्रकार से कोशिश यही की गयी।

मैं मानता हूं कि 2024 के लोकसभा के चुनाव के जो नतीजे हैं हर पैरामीटर से देखेंगे दुनिया ये मानती है और मानेगी ये एनडीए का महा विजय है और आपने देखा दो दिन कैसा चला जैसे हम तो हार चुके हैं, गए, सब चारों तरफ यही दिखता था, क्योंकि उनको अपने कार्यकर्ताओं का मोरल हाई करने के लिए ऐसे काल्पनिक, फरेब ये करने पड़ रहे और गठबंधन के इतिहास में अगर आंकड़ों के हिसाब से देखें तो ये सबसे मजबूत गठबंधन की सरकार है लेकिन कोशिश ये की गई कि इस विजय को स्वीकार ना करना, उसको पराजय के छाया में डुबो के रखना, लेकिन उसके ऐसी चीजों की बाल मृत्यु हो जाती है, और हो भी गई लेकिन देशवासी जानते हैं कि ना हम हारे

थे ना हम हारे हैं, लेकिन चार तारीख के बाद हमारा जो व्यवहार रहा है वो हमारी वो पहचान बताता है कि हम विजय को पचाना जानते हैं, हमारे संस्कार ऐसे हैं कि विजय की गोद में उन्माद पैदा नहीं होता है और ना ही पराजित लोगों के प्रति उपहास करने के हमारे संस्कार हैं। हम विजय को भी पचाते हैं और पराजित का भी उपहास करने की विकृति हम नहीं पालते, ये हमारे संस्कार हैं। आप किसी भी बालक को पूछो कि भाई लोकसभा के चुनाव के पहले सरकार किसकी थी तो कहेगा एनडीए, 24 के नतीजों के बाद सरकार किसकी बनी एनडीए, तो हारे कहां से- भाई पहले भी एनडीए थी, आज भी एनडीए और कल भी एनडीए है। आप सोचिए 10 साल बाद भी कांग्रेस 100 के आंकड़े को नहीं छू पाई और अगर मैं 14, 19 और 24 तीन चुनाव को जोड़ करके कहूं कांग्रेस के कुल तीन चुनाव जोड़ दूं और इन तीन चुनाव में जितनी सीटें इन्हें मिली है उससे ज्यादा हमें इस चुनाव में मिली है और मैं साफ देख रहा हूं।

इंडी वालों को ये अंदाज नहीं है वे धीरे-धीरे पहले तो डूब रहे थे अब तेज गति से ये गर्त में जाने वाले हैं। इंडी अलायंस वाले देश के सामान्य नागरिकों की जो समझ है आज भी वो उसके सामर्थ्य को समझ नहीं पाए या समझना चाहते नहीं हैं। भारत के सामान्य व्यक्ति की भी एक समझ है और जो जमीन से जुड़ा रहता है ना वो समझ को छूता है, समझता है, पहचानता है वो वहां नहीं है।

इन लोगों का जो व्यवहार रहा है चार तारीख के बाद मैं आशा करता था कि वे लोकतंत्र का सम्मान करेंगे लेकिन उनके व्यवहार से लगता है कि शायद उनमें ये संस्कार आएं इसके लिए हमें और इंतजार करना पड़ेगा और तो मैं ज्यादा कुछ कह नहीं सकता और ये वो लोग हैं जो खुद की पार्टी के पीएम का अपमान करते हैं, उसके निर्णयों को फाड़ देते हैं, खुद की पार्टी के विदेशी मेहमान आ जाएं तो उसके लिए चेयर नहीं होती थी, ये सारे दृश्य आपने देखें हैं और मैं समझता हूं कि इन सारी स्थितियों में से हम लोकतंत्र की मजबूती और जनता- जनार्दन के प्रति आस्था इसको हम, लोकतंत्र हमें सबका सम्मान करना सिखाती है, विपक्ष में भी जो सांसद जीत करके आए हैं मैं उनको भी बधाई देता हूं और मैं पिछले 10 वर्ष में एक चीज मिस कर रहा था कि डिबेट, पार्टिसिपेशन, क्वालिटी ऑफ डिबेट्स मैं मिस कर रहा हूं लेकिन मैं आशा करता हूं अब इस नया जो सदन बना है वो कमी मुझे खलेगी नहीं शायद हमारे साथी भी राष्ट्र हित की नियत के साथ सदन में आएंगे और भले वो विपक्ष में बैठे होंगे लेकिन राष्ट्र के विपक्ष में नहीं है, हमारे विपक्ष में है, राष्ट्र में तो हम सब एक ही दिशा में है, राष्ट्र में हमारा कोई पक्ष- विपक्ष नहीं है, राष्ट्र में हम 140 करोड़ है और मैं आशा करता हूं कि वो राष्ट्र हित की भावना को लेकर के सदन में आएंगे, सदन को समृद्धि देने में वे कुछ न कुछ योगदान करेंगे।

24 का जनादेश एक बात को बार-बार मजबूती दे रहा है कि देश को आज के वातावरण में सिर्फ और सिर्फ एनडीए पर ही भरोसा है और जब इतना अटूट विश्वास है इतना भरोसा है तो स्वाभाविक है देश की अपेक्षाएं भी बढ़ेंगी, और मैं इसे अच्छा मानता हूं और हम सबका कर्तव्य भी मानता हूं और इन अपेक्षाओं को पूर्ण करने के लिए और मैंने पहले भी कहा था, जो 10 वर्ष हमने काम किया है वो तो ट्रेलर है और वो मेरा चुनावी वाक्य नहीं था ये मेरा कमिटमेंट है, हमें और तेजी से और विस्तार से और तेज गति से देश के आकांक्षाओं को पूर्ण करने में रत्ती भर भी विलंब नहीं ही करना है। जनता-जनार्दन चाहती है हम पहले से ज्यादा डिलीवर करें, जनता चाहती है कि हम खुद ही हमारे पुराने रिकॉर्ड तोड़े और मैं एक तरफ एनडीए रखूं दूसरी तरफ भारत के लोगों के सपने और संकल्पों को रखूं तो मैं कहूंगा एनडीए- न्यू इंडिया, डेवलप इंडिया, एस्पिरेशनल इंडिया और इसी सपने और संकल्पों को पूरा करना ये हम सबका संकल्प भी है, कमिटमेंट भी है और हमारे पास रोड मैप भी है।

एनडीए ने हमेशा करप्शन फ्री, रिफॉर्म ओरिएंटेड, स्थिर सरकार देश को दी है जब-जब हमें अवसर मिला हम लोगों ने काम किया है उसके सामने कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए अब उन्होंने पुरानी अपनी छवि सुधारने के लिए नाम बदल दिया लेकिन पहचान घोटालों की है आए दिन घोटाले यही पहचान रही है और नाम बदलने के बावजूद भी देश उनके घोटालों को नहीं भूला है, उनको नकारा है और मैं कह सकता हूं - इंडी अलायंस वालों ने एक व्यक्ति का अप्रोच करने के वन प्वाइंट एजेंडा के कारण देश की जनता ने उनको ही अपोजिशन में बिठा दिया है। एनडीए विकसित भारत इस संकल्प को लेकर के चुनाव में गया था, देश के लिए सकारात्मक सोच को लेकर के गया था, देश

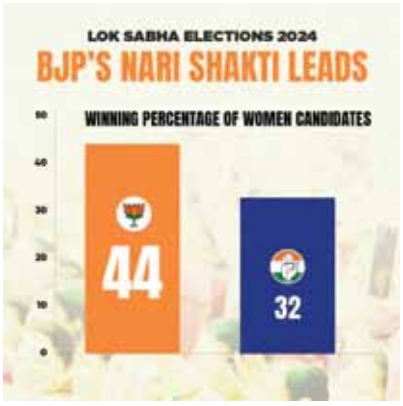

की युवा शक्ति के सामर्थ्य को समझ कर के नए अवसरों को लेकर के देश को आगे बढ़ने की बात लेकर के गया था जबकि हमारे सामने जो लोग थे वो भ्रम फैलाना, झूठ फैलाना, यही गुमराह करने वाले काम यही करते रहे थे। अब एनडीए और उनका काम देखें इवन नामांकन में जाएंगे तो भी आपको दिखेगा उनका चुनाव प्रचार उनका नामांकन हम लोगों का एक- एक दृश्य देख लीजिए और उनका एक-एक दृश्य देखिए कितना बड़ा अंतर है हर चीज में उनका कैरेक्टर दिखाई देता है और क्या रहा फोटो ऑफ के लिए तो उन्होंने अलायंस घोषित कर दिया लेकिन कितने ही राज्यों में वो आपस में लड़ते रहे हैं चुनावी जंग में एक- दूसरे की पीठ में छुरा भोंकते रहे कभी उन्होंने कहा ये तो हमारा वैचारिक अलायंस है वो विचार लेवल पर ठीक है बाकी नीचे तो हमारा अपना हम तैयार करेंगे और अब फिर उन्होंने कहा हम तो सीट के आधार पर अलायंस करेंगे टोटल ना भी करें ये भी खेल खेला और अभी- अभी तो चुनाव पूरा हुआ और शुरु कर दिया कि ये तो हमारा अलायंस लोकसभा के चुनाव के लिए था बाद में नहीं है ये भी शुरू कर दिया यानी मैंने बहुत पहले कहा था आप देख लेना 4 जून के बाद बिखराव शुरू हो जाएगा और वो शुरू हो चुका है। इसका मतलब ये हुआ कि वो सिर्फ और सिर्फ सत्ता सुख के लिए एक-दूसरे का साथ देने की कोशिश करते थे लेकिन उनमें उनका अगर स्वार्थ निश्चित होता तो साथ देना वरना नहीं देना ये कैरेक्टर था।

ये लोग कितने ही बड़े झूठ बोलते रहे हैं और आप देखिए चुनाव के समय उन्होंने देश के सामान्य नागरिक को गुमराह करने के लिए जो पर्चियां बांटी ये देंगे और वो देंगे और ढिकाना देंगे फलाना देंगे दो दिन से मैं देख रहा हूं कि कांग्रेस के दफ्तरों पर लोग कतार लगाकर खड़े हैं कि पर्ची है एक लाख रुपए कहां है लाओ भाई मांग रहे हैं लोग यानी आपने

गरीब का सशक्तिकरण और मिडिल क्लास को सुविधा ये हमारी प्राथमिकता है क्योंकि मध्यम वर्ग अब इस देश का एक बहुत बड़ा चालक वर्ग है, भारत की ग्रोथ स्टोरी में ये ऐसे- ऐसे नए फोर्सेस मैं देख रहा हूं जो हमारी बहुत बड़ी शक्ति बनने वाले हैं...

...और इसलिए हम उस पर भी उतना ही और मिडिल क्लास की बचत कैसे बढ़े, सेविंग कैसे बने उसके लिए उसके क्वालिटी ऑफ लाइफ के लिए हम क्या कर सकते हैं हमारी योजनाओं का विस्तार कैसे किया जाए हमारे नीति नियमों में बदलाव कैसे किया जाए उस पर भी हम आने वाले दिनों में काम करेंगे।

जनता- जनार्दन की आंखों में कैसा उनको भ्रमित किया, कैसी आंख में धूल झोंक दी वो बेचारा सामान्य नागरिक मान के चलता था हां भाई चार जून के बाद रुपया मिल जाएगा इसलिए वो जाकर खड़ा रह गया और अब उसको धक्का मारा जा रहा है, डंडे मारे जा रहे वहां से निकाला जा रहा है अब इस प्रकार का चुनाव ये अपने आप में देश के गरीबों का अपमान है, हमारे देश के सामान्य नागरिकों का अपमान है और कभी भी देश ऐसी हरकतों को ना भूलता है, ना ही माफ कभी करता है।

हमारे लिए संतोष की बात है कि हम एक कमिटमेंट से काम करते रहे हैं 10 साल में हमने 25 करोड़ गरीबों को गरीबी से बाहर निकाला है, गरीब कल्याण का एक सुरक्षित मजबूत कवच दिया है हमने उसको और उसके अंदर भी एक नए एस्पिरेशन पैदा हुई कि हां अब मुझे गरीब नहीं रहना है और उसके लिए मुझसे जो हो सके मैं हर अवसर का फायदा उठाऊंगा। तीन करोड़ गरीबों को घर ऐसे कहने का आंकड़ा नहीं जी कितनी मेहनत पड़ती है मुझे मालूम है लेकिन हम सफलतापूर्वक इसको

कर पाए हैं। चार करोड़ लोगों को दे चुके हैं, तीन करोड़ का हम संकल्प लेकर के आज से आगे बढ़ेंगे यानी ये भी हिम्मत है कि चार करोड़ देने के बाद जिन परिवारों का विस्तार हुआ है, जरूरत पड़ी है और राज्यों की भी उसमें इच्छा है तीन करोड़ नए घर बनाने का संकल्प। 70 वर्ष की आयु से ऊपर के व्यक्तियों को नागरिकों को 5 लाख रुपए तक इलाज के लिए मुफ्त इलाज की व्यवस्था। मुद्रा योजना के तहत हमारे नौजवानों को कारोबार के लिए 20 लाख तक की उनकी बैंक से उनको लोन मिले इसकी व्यवस्था ये मैं समझता हूं कि वायदा हमारे तीसरे कार्यकाल की ये गारंटियां हैं सब मैं अभी बताता नहीं हूं लेकिन इन गारंटी के प्रति हम कमिटेड है और उसे पूर्ण करने के लिए हम कोई कमी नहीं रखेंगे।

गरीब का सशक्तिकरण और मिडिल क्लास को सुविधा ये हमारी प्राथमिकता है क्योंकि मध्यम वर्ग अब इस देश का एक बहुत बड़ा चालक वर्ग है, भारत की ग्रोथ स्टोरी में ये ऐसे- ऐसे नए फोर्सेस मैं देख रहा हूं जो हमारी बहुत बड़ी शक्ति बनने वाले हैं और इसलिए हम उस पर भी उतना ही और मिडिल क्लास की बचत कैसे बढ़े, सेविंग कैसे बने उसके लिए उसके क्वालिटी ऑफ लाइफ के लिए हम क्या कर सकते हैं हमारी योजनाओं का विस्तार कैसे किया जाए हमारे नीति नियमों में बदलाव कैसे किया जाए उस पर भी हम आने वाले दिनों में काम करेंगे।

पंचायत से पार्लियामेंट तक हमारी नारी शक्ति की सक्रिय भागीदारी ये हमारा कमिटमेंट

है और हमने हमारे पिछले कार्यकाल में नारी शक्ति वंदन अधिनियम करके उस बात को हमने आगे बढ़ाया और वो दिन दूर नहीं होगा जब हमारे सदन में बहुत बड़ी तादाद में हमारी माताएं- बहनें देश का नेतृत्व करती हुई दिखाई देंगी। इस पूरे चुनाव में हम सबसे ज्यादा महिला उम्मीदवारों को टिकट देने वाली पार्टी रहे हैं ये हमारा कमिटमेंट है। हमारी महिला सांसदों को जो आशीर्वाद देश की जनता ने दिया है मैं इसके लिए विशेष रूप से उनका आभार व्यक्त करता हूं और जी-20 समिट में दुनिया के सामने एक विषय लेकर के हम बड़े आग्रह से गए हैं और वो है एंपावरमेंट ऑफ वूमेन, डेवलपमेंट ऑफ वूमेन इन सारी बातों से तो हम परिचित हैं हमने एक नया शिफ्ट किया है और हम जी 20 समिट से भी इसको आगे बढ़ा रहे हैं वूमेन लेड डेवलपमेंट। एक बार हमारा इस प्रकार का कमिटमेंट बनता है तो परिवर्तन बिल्कुल साफ नजर आता है।

एनडीए का ये कार्यकाल बड़े फैसलों का है, तेज विकास का है और अब हम समय गंवाना नहीं चाहते कि हम पांच नंबर की इकोनॉमी से तीन नंबर की इकोनॉमी पर पहुंचना है और ये खाली पांच और तीन का आंकड़ा नहीं है उसके कारण जो अर्थव्यवस्था का कद बन जाता है वो सामान्य मानवी की आशा- आकांक्षाओं को पूरी करने के लिए सरलता बढ़ जाती है जी। देश के लिए जो जरूरतें हैं वो आराम से पूरी करने का सामर्थ्य बन जाता है और इसलिए हम उस दिशा में बड़ी कोशिश करके आगे बढ़ना चाहते हैं राज्यों का सहयोग भी उसमें उतना ही महत्वपूर्ण है और भारत के संविधान ने हमसे जिस प्रकार का दिशा- निर्देश किया है कोऑपरेटिव फेडरलिज्म का लेकिन मैंने उसमें आग्रह रखा है कॉम्पिटेटिव कोऑपरेटिव फेडरलिज्म हमारे राज्यों के बीच में भी तंदुरुस्त स्पर्धा हो, राज्य और केंद्र के बीच में भी तंदुरुस्त स्पर्धा हो, हम अच्छा करने की स्पर्धा करें और उस दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं और हमने देखा है जब कॉम्पिटेटिव कोऑपरेटिव फेडरलिज्म की बात करता हूं, आपने देखा जी- 20 समिट। हम एक जगह पर कर सकते थे। हम भी मालाएं पहन करके फोटो निकलवा सकते थे । लेकिन हिंदुस्तान के अनेक शहरों में 200 से ज्यादा मीटिंग हुई और दुनिया भर के नीति निर्धारक जो कहे जी-20 देशों के और बाकी भी पांच- सात देशों के वो हिंदुस्तान के कोने- कोने गए उनके देशों में जाकर के भारत की विविधता भारत की विशालता इसकी चर्चा कर रहे हैं उनके लिए आश्चर्य है ये, हमने तो दिल्ली आकर के वापस जाते थे पता ही नहीं था कि देश इतना बड़ा है, ये अपनी एक ताकत का परिचय हुआ है। हमने कोविड में देखा राज्यों के साथ कोऑपरेशन के साथ हमने जिस प्रकार से लड़ाई लड़ी और एक सूत्र में रह कर लड़ाई लड़ी, दल किसी का भी हो सरकार में लेकिन हमने इस काम को किया क्योंकि हमारा कोऑपरेटिव फेडरेलिज्म के प्रति कमिटमेंट है। एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट एक ऐसा मॉडल है गवर्नेंस का जिसमें राज्य भी उतना ही सक्रियता से हमारे साथ जुड़े हुए हैं और दुनिया के लिए जो डेवलपिंग कंट्रीज हैं उनके लिए गवर्नेंस का एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत हो रहा है जिसका आप तो केस स्टडी के रूप में दुनिया के अनेक यूनिवर्सिटी केस स्टडी करना शुरू की अब उसको हम आगे बढ़ाते हुए एस्पिरेशनल ब्लॉक की तरफ ले जा रहे हैं ताकि हमारे ग्रास रूट लेवल पर भी जो वीक एरियाज हैं जहां सुविधाएं भी सामान्य एवरेज से भी नीचे हैं उसको हम जल्दी से जल्दी स्टेज की एवरेज तक लाना चाहते हैं। देश का रीजन कोई भी क्षेत्र हो सर्वांगीण विकास को लेकर के हम चलेंगे।

गत 10 वर्ष में इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में हमने एक बहुत बड़ा यानी सोचने में भी बदलाव लाएं जमीन पर तो लाएं ही लाएं वरना हमारे देश में सोचा चलेगा यार एक बार कर लो ना उस सारे में से बदलाव नहीं अब तो अच्छा ही चाहिए, बड़ा ही चाहिए, जल्दी से जल्दी पहुंचाने वाला चाहिए, सामान्य मानवी के मन को हमने इससे प्रेरित भी किया है और पुरुषार्थ करके हमने उस दिशा में काम किया है। पांच साल में हमें गति शक्ति यानी इस प्रकार के प्लेटफार्म पर जो काम किया है जो काम 6-6, 8-8 महीने तक नहीं होता था वो आज 15-20 दिन में कर सकते हैं सब टेक्नोलॉजी का उपयोग करके हम काम कर रहे हैं और ये जब होता है तो उसका मूल फायदा देश के नौजवानों के लिए रोजगार के अति अवसर बन जाते हैं उनके लिए जीवन में सिलेक्शन के लिए बहुत बड़ा दायरा बढ़ जाता है और वो हमें आज भारत दुनिया में विश्व के लिए एक नया मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभर रहा है और जब हम मैन्युफैक्चरिंग हब कह रहे तब सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक गुड्स या सर्विसेज की मैं बात नहीं कर रहा हूं, मैं फूड प्रोसेसिंग में भी आज दुनिया में हम बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और वो भारत के किसानों को बहुत बड़ी ताकत देने वाला है। उसी प्रकार से स्पेस हो, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हो, स्टार्टअप्स

की बात हो, स्किल, जॉब अपॉर्चुनिटी की बात हो आज भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा, बढ़ रहा है ये मेरा विश्वास है।

मुद्रा योजना, ड्रोन दीदी, विश्वकर्मा योजना इसने भी नई संभावनाओं को जन्म दिया है।

हमारी संस्कृति, हमारी विरासत उसके प्रति हम जितना ध्यान केंद्रित करेंगे दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा और इसलिए हम उन दिशा में और मैं मानता हूं भारत के लिए टूरिज्म एक ऐसा एवेन्यू है जो गत शताब्दी में हमें कभी यानी आज से लेकर के पीछे के 100 साल मैं कहूं ऐसा अवसर नहीं मिला है जैसा आने वाले 25 साल में मिलने वाला है। दुनिया भारत की तरफ मुड़ने वाली है अब हमारा काम है हम इसके लिए आवश्यक व्यवस्थाओं को विकसित करें, हमारी विरासत के प्रति हमारा पर्यटन का विकास करते हुए एक विन विन सिचुएशन का हम फायदा उठाएं और उसमें बहुत अधिक निवेश की संभावनाएं मैं देखता हूं, और ये एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हर स्तर के लोग कमाते हैं गरीब से गरीब आदमी भी कमाता है और बड़ी- बड़ी होटल वाला भी कमाता है हर कोई इसमें कमाता है और हमने टूरिज्म पर हम बल देना चाहते हैं बहुत पोटेंशियल है। आज इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र खुले हैं इसका फायदा इसको मिलता है एयरवे हो, रेलवे हो, हमारे एक्सप्रेसवे हो ये हमारा यातायात जितना बेहतर हो रहा है, हमारा डिजिटल कनेक्टिविटी का जो काम है ये इसके लिए बहुत बड़ा पॉजिटिव ग्राउंड तैयार कर रहा है और जिसका फायदा मिलने वाला है और जो वोकल फॉर लोकल और रीजनल टूरिज्म इसको एक बल देने का काम है।

अब दुनिया एक नए युग में प्रवेश कर रही है जिस समय औद्योगिक क्रांति हुई उस समय हम गुलामी के दौर से गुजरे तो औद्योगिक क्रांति का जितना फायदा लेना चाहिए हम नहीं ले पाए अब एक नया युग शुरू हो रहा है हरित

युग, ग्रीन एरा भारत के पास बहुत संभावनाएं हैं इसका नेतृत्व करने की और हम इसके लिए आने वाले दिनों में ग्रीन हाइड्रोजन की बात हो, ग्रीन एनर्जी हो या ग्रीन जॉब्स हो या ग्रीन मोबिलिटी हो इन सारे विषयों को हम इतनी तेजी से आगे बढ़ाना चाहते हैं ताकि हरित युग का नेतृत्व दुनिया में भारत का सामर्थ्य सिद्ध कर दें ये हम चाहते हैं। इसी सिलसिले में इस 5 जून को जब पर्यावरण दिवस था, 4 जून को नतीजे आ गए थे तो उसी दिन मेरे मन में एक विचार आया कि कार्यक्रम 5 जून को हमने आरंभ किया- **'एक पेड़ मां के नाम'**, हर किसी को मां के प्रति श्रद्धा होती है और मैं भी देशवासियों को कहूंगा कि आने वाले समय में कभी आपकी माता जी का जन्मदिन हो या कोई और शुभ दिन हो अपनी मां के नाम पर एक पेड़ लगाइए और मां जीवित है तो साथ लेकर जाइए उनकी फोटो आप सोशल मीडिया में अपलोड कीजिए और मां नहीं हैं उनकी फोटो रख करके एक पेड़ लगाइए और वो अपनी मां का भी सम्मान होगा और धरती मां की सेवा होगी हम इन दो माताओं की सेवा करें।

एनडीए- अब भारत आइसोलेशन में नहीं जी सकता, वैश्विक परिवेश में भारत की भूमिका दिनों दिन बहुत बढ़ती चली जा रही है। 2014 में जब एनडीए की सरकार बनी पूरे विश्व में उसी एक पल से एक नया जिज्ञासा पैदा हुई थोड़ी आशा के संकेत उनको नजर आने लगे और फिर उस बदलाव बहुत बड़ा तेजी से आया और पिछले 10 वर्ष में भारत ने जिन कामों को बल दिया है आज भारत की छवि विश्व बंधु की बन चुकी है विश्व हमें एक बंधु के रूप में स्वीकार कर रहा है और जब दुनिया हमें विश्व बंधु के रूप में स्वीकारती है तो हमारी वैश्विक जिम्मेवारियों को भी हमने हमारे आने वाले रोड मैप में महत्व देना ही होगा और भारत की सफल विदेश नीति ने अच्छे परिणाम भी दिए हैं।

हमने हर संकट को उस प्रकार से हैंडल किया जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों को हमने प्राथमिकता दी उसका परिणाम है कि सामान्य मानवी के मन में ये विश्व बंधु वाला भाव बहुत मजबूत हुआ और भारत का सेवा भाव का जो कैरेक्टर है उसको विश्व ने पहचाना है चाहे यूक्रेन का संकट हो चाहे अफगानिस्तान का संकट हो हर हमारे लोगों को बचाना हो हमने किसी भी क्षेत्र में हमने कोई कमी नहीं रखी है और इस क्षमता के कारण भारत में निवेश की संभावनाएं बहुत बढ़ने वाली है मैं राज्यों से भी कहूंगा कि आप प्रगतिशील नीतियां बनाकर रेडी रहिए विश्व आज आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और जो राज्य ज्यादा स्पष्ट नीतियों के साथ आएगा जो राज्य उन कंपनियां विदेश से आने वाले लोगों को ठीक से हैंडल करेगा उसको बेनिफिट मिलने ही वाला है और भारत ने जो नीतियां बनाई हैं, भारत ने जो वातावरण बनाया है उसका लाभ भारत के हर राज्य को मिलना चाहिए और उस दिशा में हम तेजी से काम करना चाहते हैं।

हमने जी-20 समिट में देखा है दुनिया का भारत के प्रति नजरिया बदला है जो लोग इन चीजों को माइन्यूटली देखते हो उनको पता होगा कि जी- 20 एक प्रकार से कई संकटों से गुजर

रहा था उतार- चढ़ाव आते रहते थे, बिखराव भी नजर आ रहा था लेकिन भारत में जी-20 आने के बाद नए प्राण से भर गया है, नया सामर्थ्य आ गया है और ये भारत की ताकत है कि उसने पूरे विश्व को जोड़ने में जी-20 के माध्यम से बहुत बड़ा काम किया है और उसके इन दिनों भी जो परिणाम आए इसके बाद मेरा काफी समय विदेश के सरकारों से फोन पर अभिनंदन स्वीकार करने में गया और शायद मुझे 14 और 19 में भी ऐसा अनुभव नहीं था जितना इस बार फ्लो है। दुनिया के करीब-करीब अब नाम लें उसने भारत को शुभेच्छा व्यक्त की है या बात करने की कोशिश की है यानी ये वैश्विक जो हमारा ताकत है उसका परिचय करवा रहा है और उसके कारण मैं मानता हूं कि विश्व में हमारा सम्मान और साथ-साथ भारत में निवेश ये दोनों संभावनाएं बढ़ रही हैं।

हमारे संविधान का ये 75वां वर्ष है हम चाहते हैं कि संविधान हमारी संवैधानिक संस्थाओं का संरक्षण भर इसके मात्र के लिए है ऐसा नहीं कोई अदालत में धाराओं का उपयोग करके काम करने के लिए नहीं है ये एक हमारी भावना है, हमारा स्पिरिट है और हमें इस 75 साल को ऐसे मनाना है ताकि हम संविधान के स्पिरिट को जन- जन तक पहुंचाएं, हर जन को संविधान की जो भावना है, कर्तव्य की भावना है अनेक बातें उनके प्रति समर्पण उसका बढ़ें उस दिशा में हम काम करना चाहते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष के उत्सव में देश आज रंगा हुआ है और हम हमारे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा है क्योंकि उसमें राष्ट्र प्रथम की भावना है। छत्रपति शिवाजी महाराज को याद करते ही राष्ट्र प्रथम की भावना हमें मजबूती देती है और इसलिए हम देश में इसी एजेंडा को आगे रखते हुए और जब इसी समय 350 साल का पर्व आया है तो हमें अपनी पॉलिसी और परफॉर्मेंस और सामान्य मानवी का जीवन बेहतर करना है उस पर जरा भी विलंब नहीं करना है।

विकास की सारी तैयारियां, रोड मैप लेकर हम चलेंगे ही, चल रहे हैं लेकिन साथ- साथ हम नए- नए सांसद आए हैं, कुछ पुराने सांसद हैं, कोई ज्यादा अनुभवी सांसद भी हैं, आप देखते हैं कि इन दिनों पिछले दो दिन से आप टीवी पर देखते होंगे एक भी सच्चाई मुझे उसमें नजर नहीं आई कोई ये कह रहा है कोई वो कह रहा था सब मैंने कहा कि भाई पूछो तो ये जानकारी लाते कहां से हैं। गप- गोले चला रहे हैं किसी के खाते में कुछ भी डाल कर के चल रहा है मतलब ये थोड़े दिन, क्योंकि 10 साल से ऐसे अवसर नहीं मिले हैं तो शायद ये उबाल जरा ज्यादा रहेगा, लेकिन आप मान के चलिए जी ऐसे लोग कोई पहुंचेंगे बस साब मेरा अच्छा संबंध है मंत्री में आपका नंबर कर सकता हूं आया हमें भी पता नहीं होता यार हो सकता है मिनिस्टर बनने का ये रास्ता होगा तो हम भी गलती से उसका हाथ पकड़ लेते हैं और वो पता नहीं वो किस खाई में डुबो देता है कभी-कभी तो शायद आप तो टेक्नोलॉजी ऐसी है कि हो सकता है मेरे सिग्नेचर से कोई लिस्ट बाहर निकल जाए कि ये मंत्री बन गए हो सकता है कोई बुद्धिमान डिपार्टमेंट भी बांट दें तो आजकल कई लोग सरकार बनाने में लगे हुए हैं, मंत्री पद बांट रहे हैं, पद बांट रहे हैं, व्यवस्था बांट रहे हैं मैं आपसे आग्रह पूर्वक कहता हूं और जो मोदी को जानते हैं ये सारे प्रयास निरर्थक है भाई। आप भी किसी का फोन आ जाए तो 10 बार वेरीफाई कीजिए कि जिसने फोन किया है वो सचमुच में अथॉरिटी है अदर वाइज कोई भी कहेगा कि भाई आपका नाम हो गया है सुबह परिवार को बुला लीजिए शपथ समारोह में आना है हो गया तो ऐसी गप बाजी करने वाली एक बहुत बड़ी फौज रहती है कुछ लोग आदतन करते रहते हैं, कुछ लोग मजा आती है और कुछ लोग बद इरादे से करते हैं, मेरा सभी सांसदों से आग्रह है कि हम इन सारे षड्यंत्रों का शिकार ना बनें। दूसरा हमारे जो इंडी अलायंस वालों ने इस चुनाव में फेक न्यूज में एक्सपर्टाइज कर लिया, डबल पीएचडी कर लिया है, उन्होंने वो शायद इसका भरपूर उपयोग करेंगे, हम कृपा करके इन चीजों से दूर रहें, अफवाहों से दूर रहें, ये जो टीम बैठी है वो अनुभवी टीम है, मुझे भी सही सलाह देने वाली टीम है, और इसलिए टीम मिलकर के बहुत सही निर्णय करने वाली है। कृपा करके ब्रेकिंग न्यूज के आधार पर देश चलेगा नहीं ये मान के चलिए।

विकसित भारत का संकल्प लेकर के हम चले हैं तीन नंबर की इकोनॉमी पहुंचना मैं जानता हूं निश्चित रोड मैप के साथ उसको हम पार करने वाले हैं और मैंने पहले भी कहा था कि मेरा पल- पल देश के नाम है, मेरा पल-पल आप लोगों के नाम है, मैं 24/7 अवेलेबल हूं। हमें मिलकर के देश को आगे बढ़ाना है। फिर से एक बार आप लोगों ने मुझ पर जो विश्वास जताया है, जो प्यार दिखाया है और जो समर्थन दिया है वाकई मैं मानता हूं भारत के लोकतंत्र की एक बहुत बड़ी ताकत है मैं जितना आपका आभार व्यक्त करूं उतना कम है और मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपकी आशा-अपेक्षाओं को पूरी करने में परिश्रम करने में कोई कमी नहीं रखूंगा। मेरे लिए जन्म सिर्फ और सिर्फ वन लाइफ-वन मिशन और वो है मेरी भारत माता।

ये मिशन है 140 करोड़ देशवासियों के सपनों को पूरा करने के लिए खप जाना, ये मिशन है 140 करोड़ देशवासियों को हजार साल की मुसीबतों से जो गुजरी हुई पीढ़ी दर पीढ़ी है उसे मुक्ति दिला करके सम्मान के साथ विश्व में मेरा हर देशवासी दुनिया उसे देखे तो उसका मन कर जाए काश ये हिंदुस्तान का है अरे नजर मिल जाए तो अच्छा होगा ये मैं स्थिति पैदा करना चाहता हूं। उसका मन लालायित होना चाहिए हिंदुस्तानी है अरे यार जरा हाथ मिला लूं कुछ एनर्जी मुझे भी आ जाए मैं देश को इस ऊंचाई पर ले जाना चाहता हूं और मुझे पक्का विश्वास है आपका साथ, आपका सहयोग, आपका अनुभव बहुत बड़े परिणामों की संभावनाएं लेकर के आया है। लोकसभा का ये गठन उन सभी आकांक्षाओं को पूरा करेगा। ▪

लगातार तीसरी बार भाजपा- एनडीए सरकार- जगत प्रकाश नड्डा

- देश के करोड़ों देवतुल्य मतदाताओं के आशीर्वाद से देश में लगातार तीसरी बार आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा-एनडीए की सरकार बन रही है।
- देश की जनता और भाजपा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को विजय की हार्दिक बधाई।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने अरुणाचल प्रदेश और ओडिशा विधान सभा चुनाव में स्पष्ट और ऐतिहासिक जनादेश के साथ शानदार जीत दर्ज की है।
- आंध्र प्रदेश में भी एनडीए ने शानदार जीत दर्ज की है। आंध्र प्रदेश में एनडीए ने विधान सभा एवं लोक सभा चुनाव में प्रचंड बहुमत प्राप्त किया है।
- कुछ लोग जिनके लिए खुद का स्वार्थ महत्वपूर्ण होता है, स्वार्थ के लिए गठबंधन करते हैं एवं स्वार्थ पूर्ण तरीके से लोक लुभावने वादे करते हैं, उन्हें देश की जनता भली-भांति सबक सिखाती है।
- चुनाव के दौरान विपक्ष ने झूठ फैलाया, जनता को बरगलाया, प्रजातांत्रिक मर्यादाओं को ताक पर रखा और उन्हें अभी भी लगता है कि देश में एक ही परिवार राज कर सकता है, रस्सी जल गई, मगर बल नहीं गया।
- देश की जनता ने बारंबार अवसरवादी इंडी गठबंधन को खारिज किया और 2024 में भी इस गठबंधन को हार का मुंह देखना पड़ा।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए गठबंधन मजबूती से आगे बढ़ेगा और देश को आगे ले जाने का काम करेगा। भाजपा और एनडीए का प्रत्येक कार्यकर्ता देश को सामर्थ्यवान, सक्षम, आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए कार्य करेगा।

चाहे चुनाव की बेला हो, देश के नेतृत्व करने की बात हो और देश को समस्याओं से निकालने का या आपदा को अवसर में बदलने में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमेशा पार्टी को और देश की जनता का सामने से नेतृत्व किया है।

एनडीए के साथी दल और भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं के बीते कई महीनों से अथक प्रयास के कारण जो जीत मिली है उसके लिए भारतीय जनता पार्टी आभार प्रकट करती है।

एनडीए को पूर्ण बहुमत मिलने पर देश की देवतुल्य जनता का आभार और जीत की बधाई।

यह सबको स्मरण है कि चाहे चुनाव की बेला हो, देश के नेतृत्व करने की बात हो और देश को समस्याओं से निकालने का या आपदा को अवसर में बदलने में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हमेशा पार्टी को और देश की जनता का सामने से नेतृत्व किया है। एनडीए के साथी दल और भाजपा के सभी कार्यकर्ताओं के बीते कई महीनों से अथक प्रयास के कारण जो जीत मिली है उसके लिए भारतीय जनता पार्टी आभार प्रकट करती है। देश के करोड़ों मतदाता जिन्होंने आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विश्वास जताया और भारतीय जनता

पार्टी को इस ऐतिहासिक पल का गवाह बनने में मदद की और एनडीए को अपना आशीर्वाद दिया ऐसे करोड़ों मतदाताओं का भारतीय जनता पार्टी अभिनंदन करती है और आभार प्रकट करती है। देश ने राजनीति में एक नई करवट ली है और 2014 के बाद एक नया इतिहास रचा है। 2014 के बाद आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एक मजबूत सरकार का गठन हुआ जिसे 2019 में भी भारत की देवतुल्य जनता का आशीर्वाद मिला। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की नीतियों के कारण फिर से 2024 में जनता के आशीर्वाद के साथ भाजपा आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के इस इतिहासिक पल की साक्षी बन रही है।

एनडीए के गठन के पश्चात यह गठबंधन भारत की राजनीति में तीसरी बार लगातार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रहा है। जो लोग देश हित के लिए काम करते हैं उन्हें चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है और उन चुनौतियों से लड़ कर के देश को आगे बढ़ाने के लिए काम करते है। लेकिन वहीं कुछ लोग जिनके लिए खुद का स्वार्थ महत्वपूर्ण होता है और खुद के स्वार्थ के लिए गठबंधन करते हैं एवं स्वार्थपूर्ण तरीके से लोक लुभावने वादे कर के सरकार बनाना चाहते हैं ऐसे लोगों को देश की जनता सबक सिखाती है और इनका इकोसिस्टम है, जो देश के विकास की दृष्टि से जुड़ी हुई चीजें हैं उन्हें नाकार देता है। बंगाल में 3 सीटों से बढ़कर 77 सीट हो जाती है लेकिन उसकी चर्चा नहीं होती और कह दिया जाता है कि हम हार गए, वे लोग भूल जाते हैं कि भाजपा के मत प्रतिशत में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में ओडिशा में पहली बार विशुद्ध भारतीय जनता पार्टी की सरकार बन रही है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में एनडीए का परचम लहराया है। अरुणाचल प्रदेश में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सरकार बन रही है।

ओडिशा में भाजपा ने 40 प्रतिशत मतों के साथ 80 सीटों पर जीत प्राप्त की हैं।

आंध्र प्रदेश में भी एनडीए के साथी दल ने प्रचंड जीत दर्ज की है और लोकसभा में भी जनता ने भाजपा और एनडीए को विजयी बनाया है।

केरल में भी भाजपा का खाता खुला है और कमल खिला है और सभी राज्यों में भारतीय जनता पार्टी का वोट प्रतिशत बढ़ा है।

2014 में देश की गरीब माँ के बेटे देश के प्रधानमंत्री बने और श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत में रहने वाले लोगों के दुखों को आत्मसात किया। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी यह जानते थे कि जनता की आवश्यकता क्या हैं और देश को कैसे आगे बढ़ाना है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि उनकी सरकार गांव, गरीब, वंचित, पीड़ित, दलित, शोषित, महिला, युवा और किसान को समर्पित रहेगी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के 50 करोड़ लोगों को आयुष्मान भारत के तहत मुफ्त इलाज मुहैया कराया जा रहा है और तीसरे कार्यकाल में देश के सभी 70 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों को भी यह सुविधा मुहैया कराई जाएगी। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में महिलाओं को गैस सिलेंडर, हर घर जल से नल पहुंचाया गया और लोगों को बैंक से जोड़ने का काम किया गया।

2014 में भारत की अर्थव्यवस्था और बैंकिंग क्षेत्र लड़खड़ा गई थी और दुनिया में भारत की ताकत कम हो गई थी। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की बैंकिंग और अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की गई, जिसकी सराहना दुनिया ने की। 2014 में भारत विश्व की 11 वें स्थान की अर्थव्यवस्था था, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज विश्व की 5 वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और एनडीए सरकार के तीसरे कार्यकाल में भारत विश्व की तीसरी बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन जाएगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गांव को मजबूती मिली, गरीबों को ताकत प्रदान की गई, दलितों को सम्मान दिया गया, युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा किया गया, महिलाओं का सम्मान किया गया, किसानों को मुख्यधारा में लाया गया और वंचित-पीड़ितों को आगे बढ़ाया गया।

विपक्ष ने पिछले 10 वर्षों में नकारात्मक सोच के साथ काम किया और कोई भी सकारात्मक योगदान नहीं दिया। अभी भी विपक्ष को लगता है कि देश में एक ही परिवार राज कर सकता है, रस्सी जल गई मगर बल नहीं गया। चुनाव के दौरान विपक्ष ने झूठ फैलाया, झूठे वीडियो से जनता को बरगलाने का काम किया और प्रजातांत्रिक मर्यादाओं को ताक पर रखा। विपक्ष ने हार की बौखलाहट में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपशब्द कहे। देश की जनता ने बारम्बार अवसरवादी गठबंधन को खारिज किया और 2024 में भी इस गठबंधन को हार का मुंह देखना पड़ा।

विपक्ष को अपना आत्म निरिक्षण करने की आवश्यकता है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए का गठबंधन मजबूती से आगे बढ़ेगा और देश को आगे ले जाने का काम करेगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और एनडीए का प्रत्येक कार्यकर्ता देश को सामर्थ्यवान, सक्षम, आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगा और देश को विकसित बनाने के लिए कार्य करेगा। ▪

"एमपी के मन में मोदी" का भाव साकार हुआ - शिवराज सिंह चौहान

चुनाव में केंद्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओं और प्रदेश संगठन की मेहनत से छिंदवाड़ा लोकसभा में ऐतिहासिक विजय मिली है, अब वह कसक भी समाप्त हो गई।

'एमपी के मन में मोदी' का भाव साकार हुआ है। मध्यप्रदेश की जनता ने बता दिया कि श्री नरेन्द्र मोदी जी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री रहेंगे।

पिछले चुनाव में भाजपा ने मध्यप्रदेश में 28 लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त की थी। छिंदवाड़ा नहीं जीत पाने की कसक थी। लेकिन इस चुनाव में केंद्रीय नेतृत्व के मार्गदर्शन में कार्यकर्ताओं और प्रदेश संगठन की मेहनत से छिंदवाड़ा लोकसभा में ऐतिहासिक विजय मिली है, अब वह कसक भी समाप्त हो गई।

'एमपी के मन में मोदी' का भाव साकार हुआ है। मध्यप्रदेश की जनता ने बता दिया कि श्री नरेन्द्र मोदी जी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे। केन्द्र में तीसरी बार सरकार बनाना चमत्कार है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जो संकल्प व्यक्त किया है कि आप सभी अगले 25 वर्ष देश के लिए समर्पित कर दो। यह विराट जीत है, यह महाविजय है।

अब भारत को विकसित बनाने के लिए मध्यप्रदेश को विकसित बनाना होगा, इसके लिए हम मेहनत की पराकाष्ठा करेंगे।

मध्यप्रदेश को विकसित बनाने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश में केन्द्र और प्रदेश की भाजपा सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर धरातल पर कार्य करना है।

इस ऐतिहासिक विजय के लिए पार्टी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं को हृदय से अभिनंदन, आभार। ▪

"एमपी के मन में मोदी" हैं और हमेशा रहेंगे : विष्णुदत्त शर्मा

लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश की जनता ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की गारंटी पर विश्वास जताते हुए भारतीय जनता पार्टी को भरपूर आशीर्वाद दिया है। जनता के आशीर्वाद से ही प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर कमल खिला है और भारतीय जनता पार्टी ने विजय का नया इतिहास बनाया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एमपी के मन में थे, आज भी हैं और हमेशा रहेंगे।

मोदी जी के नेतृत्व में देश और मध्यप्रदेश विकास की नई ऊंचाइयों को छूने के लिए कदम बढ़ाएंगे। ▪

कन्याकुमारी में साधना से नए संकल्प - पीएम मोदी

लोकतंत्र की जननी में लोकतन्त्र के सबसे बड़े महापर्व का एक पड़ाव 1 जून को पूरा हुआ। तीन दिन तक कन्याकुमारी में आध्यात्मिक यात्रा के बाद, मैं अभी दिल्ली जाने के लिए हवाई जहाज में आकर बैठा ही हूं... काशी और अनेक सीटों पर मतदान चल ही रहा है। कितने सारे अनुभव हैं, कितनी सारी अनुभूतियां हैं...मैं एक असीम ऊर्जा का प्रवाह स्वयं में महसूस कर रहा हूं।

वाकई, 24 के इस चुनाव में, कितने ही सुखद संयोग बने हैं। अमृतकाल के इस प्रथम लोकसभा चुनाव में मैंने प्रचार अभियान 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणास्थली मेरठ से शुरू किया। माँ भारती की परिक्रमा करते हुए इस चुनाव की मेरी आखिरी सभा पंजाब के होशियारपुर में हुई। संत रविदास जी की तपोभूमि, हमारे गुरुओं की भूमि पंजाब में आखिरी सभा होने का सौभाग्य भी बहुत विशेष है। इसके बाद मुझे कन्याकुमारी में भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन-मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों में, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वो ज्वार, उनका आशीर्वाद...उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार...मैं सब कुछ आत्मसात कर रहा था। मेरी आंखें नम हो रही थीं...मैं शून्यता में जा रहा था, साधना में प्रवेश कर रहा था।

कुछ ही क्षणों में राजनीतिक वाद विवाद, वार-पलटवार...आरोपों के स्वर और शब्द, वह सब अपने आप शून्य में समाते चले गए। मेरे मन में विरक्ति का भाव और तीव्र हो गया...मेरा मन बाह्य जगत से पूरी तरह अलिप्त हो गया।

इतने बड़े दायित्वों के बीच ऐसी साधना कठिन होती है, लेकिन कन्याकुमारी की भूमि और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा ने इसे सहज बना दिया। मैं सांसद के तौर पर अपना चुनाव भी अपनी काशी के मतदाताओं के चरणों में छोड़कर यहाँ आया था।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

मैं ईश्वर का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे जन्म से ये संस्कार दिये। मैं ये भी सोच रहा था कि स्वामी विवेकानंद जी ने उस स्थान पर साधना के समय क्या अनुभव किया होगा! मेरी साधना का कुछ हिस्सा इसी तरह के विचार प्रवाह में बहा।

इस विरक्ति के बीच, शांति और नीरवता के बीच, मेरे मन में निरंतर भारत के उज्जवल भविष्य के लिए, भारत के लक्ष्यों के लिए निरंतर विचार उमड़ रहे थे। कन्याकुमारी के उगते हुए सूर्य ने मेरे विचारों को नई ऊंचाई दी, सागर की विशालता ने मेरे विचारों को विस्तार दिया और क्षितिज के विस्तार ने ब्रह्मांड की गहराई में समाई एकात्मकता, Oneness का निरंतर ऐहसास कराया। ऐसा लग रहा था जैसे दशकों पहले हिमालय की गोद में किए गए चिंतन और अनुभव पुनर्जीवित हो रहे हों।

कन्याकुमारी का ये स्थान हमेशा से मेरे मन के अत्यंत करीब रहा है। कन्याकुमारी में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण श्री एकनाथ रानडे जी ने करवाया था। एकनाथ जी के साथ मुझे काफी भ्रमण करने का मौका मिला था। इस स्मारक के निर्माण के दौरान कन्याकुमारी में कुछ समय रहना, वहां आना-जाना, स्वभाविक रूप से होता था।

कश्मीर से कन्याकुमारी... ये हर देशवासी के अन्तर्मन में रची-बसी हमारी साझी पहचान हैं। ये वो शक्तिपीठ है जहां मां शक्ति ने कन्याकुमारी के रूप में अवतार लिया था। इस दक्षिणी छोर पर माँ शक्ति ने उन भगवान शिव के लिए तपस्या और प्रतीक्षा की जो भारत के सबसे उत्तरी छोर के हिमालय पर विराज रहे थे।

कन्याकुमारी संगमों के संगम की धरती है। हमारे देश की पवित्र नदियां अलग-अलग समुद्रों में जाकर मिलती हैं और यहां उन समुद्रों का संगम होता है। और यहाँ एक और महान

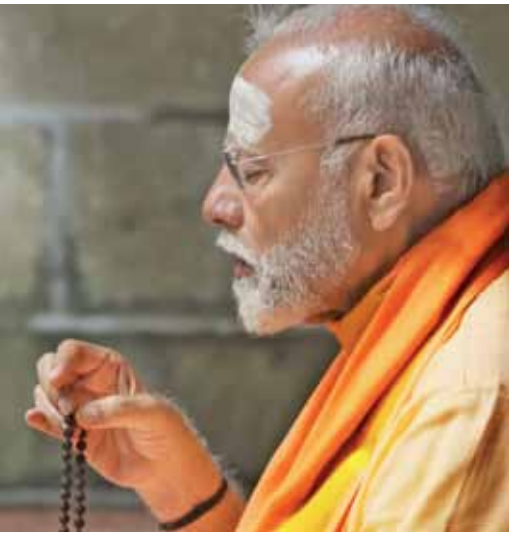

संगम दिखता है- भारत का वैचारिक संगम!

यहां विवेकानंद शिला स्मारक के साथ ही संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, गांधी मंडपम और कामराजर मणि मंडपम हैं। महान नायकों के विचारों की ये धाराएँ यहाँ राष्ट्र चिंतन का संगम बनाती हैं। इससे राष्ट्र निर्माण की महान प्रेरणाओं का उदय होता है। जो लोग भारत के राष्ट्र होने और देश की एकता पर संदेह करते हैं, उन्हें कन्याकुमारी की ये धरती एकता का अमिट संदेश देती है।

कन्याकुमारी में संत तिरुवल्लूवर की विशाल प्रतिमा, समंदर से मां भारती के विस्तार को देखती हुई प्रतीत होती है। उनकी रचना 'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य के रत्नों से जड़ित एक मुकुट के जैसी है। इसमें जीवन के हर पक्ष का वर्णन है, जो हमें स्वयं और राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। ऐसी महान विभूति को श्रद्धांजलि अर्पित करना भी मेरा परम सौभाग्य रहा।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था- Every Nation Has a Message To deliver, a mission to fulfil, a destiny to reach.

भारत हजारों वर्षों से इसी भाव के साथ सार्थक उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता आया है। भारत हजारों वर्षों से विचारों के अनुसंधान का केंद्र रहा है। हमने जो अर्जित किया उसे कभी अपनी व्यक्तिगत पूंजी मानकर आर्थिक या भौतिक मापदण्डों पर नहीं तौला। इसीलिए, 'इदं न मम' यह भारत के चरित्र का सहज एवं स्वाभाविक हिस्सा हो गया है।

भारत के कल्याण से विश्व का कल्याण, भारत की प्रगति से विश्व की प्रगति, इसका एक बड़ा उदाहरण हमारी आजादी का आंदोलन भी है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय दुनिया के कई देश गुलामी में थे। भारत की स्वतन्त्रता से उन देशों को भी प्रेरणा और बल मिला, उन्होंने आजादी प्राप्त की। अभी कोरोना के कठिन कालखंड का उदाहरण भी हमारे सामने है। जब गरीब और विकासशील देशों को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं, लेकिन, भारत के सफल प्रयासों से तमाम देशों को हौसला भी मिला और सहयोग भी मिला।

आज भारत का गवर्नेंस मॉडल दुनिया के कई देशों के लिए एक उदाहरण बना है। सिर्फ 10 वर्षों में 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर निकलना अभूतपूर्व है। प्रो-पीपल गुड गवर्नेंस, aspirational district, aspirational block जैसे अभिनव प्रयोग की आज विश्व में चर्चा हो रही है। गरीब के सशक्तिकरण से लेकर लास्ट माइल डिलीवरी तक, समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को प्राथमिकता देने के हमारे प्रयासों ने विश्व को प्रेरित किया है। भारत का डिजिटल इंडिया अभियान आज पूरे विश्व के लिए एक उदाहरण है कि हम कैसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल गरीबों को सशक्त करने में, पारदर्शिता लाने में, उनके अधिकार दिलाने में कर सकते हैं। भारत में सस्ता डेटा आज सूचना और सेवाओं तक गरीब की पहुँच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता का माध्यम बन रहा है। पूरा विश्व technology के इस democratization को एक शोध दृष्टि से देख रहा है और बड़ी वैश्विक संस्थाएं कई देशों को हमारे मॉडल से सीखने की सलाह दे रही हैं।

आज भारत की प्रगति और भारत का उत्थान केवल भारत के लिए बड़ा अवसर नहीं है। ये पूरे विश्व में हमारे सभी सहयात्री देशों के लिए भी एक ऐतिहासिक अवसर है। G-20 की सफलता के बाद से विश्व भारत की इस भूमिका को और अधिक मुखर होकर स्वीकार कर रहा है। आज भारत को ग्लोबल साउथ की एक सशक्त और महत्वपूर्ण आवाज के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन यूनियन G-20 ग्रुप का हिस्सा बना। ये सभी अफ्रीकन देशों के भविष्य का एक अहम मोड़ साबित हुआ है।

नए भारत का ये स्वरूप हमें गर्व और गौरव से भर देता है, लेकिन, साथ ही ये 140 करोड़ देशवासियों को उनके कर्तव्यों का अहसास भी करवाता है। अब एक भी पल गँवाए बिना हमें बड़े दायित्वों और बड़े लक्ष्यों की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें नए स्वप्न देखने हैं। अपने सपनों को अपना जीवन बनाना है, और उन सपनों को जीना शुरू करना है।

हमें भारत के विकास को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, और इसके लिए ये जरूरी है कि हम भारत के अंतर्भूत सामर्थ्य को समझें। हमें भारत की शक्तियों को स्वीकार भी करना होगा, उन्हें पुष्ट भी करना होगा और विश्व हित में उनका सम्पूर्ण उपयोग भी करना होगा। आज की वैश्विक परिस्थितियों में युवा राष्ट्र के रूप में भारत का सामर्थ्य हमारे लिए एक ऐसा सुखद संयोग और सुअवसर है जहां से हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

21वीं सदी की दुनिया आज भारत की ओर बहुत आशाओं से देख रही है। और वैश्विक परिदृश्य में आगे बढ़ने के लिए हमें कई बदलाव भी करने होंगे। हमें reform को लेकर हमारी पारंपरिक सोच को भी बदलना होगा। भारत reform को केवल आर्थिक बदलावों तक सीमित नहीं रख सकता है। हमें जीवन में हर क्षेत्र में reform की दिशा में आगे बढ़ना होगा। हमारे reform 2047 के विकसित भारत के संकल्प के अनुरूप भी होने चाहिए।

हमें ये भी समझना होगा कि किसी भी देश के लिए reform कभी एकाकी प्रक्रिया नहीं हो सकती। इसीलिए, मैंने देश के लिए reform, perform और transform का विजन सामने रखा। reform का दायित्व नेतृत्व का होता है। उसके आधार पर हमारी

ब्यूरोक्रेसी perform करती है और फिर जब जनता जनार्दन इससे जुड़ जाती है, तो transformation होते हुए देखते हैं। भारत को विकसित भारत बनाने के लिए हमें श्रेष्ठता को मूल भाव बनाना होगा। हमें Speed, Scale, Scope और Standards, चारों दिशाओं में तेजी से काम करना होगा। हमें मैन्युफैक्चरिंग के साथ-साथ क्वालिटी पर जोर देना होगा, हमें zero defect- zero effect के मंत्र को आत्मसात करना होगा।

हमें हर पल इस बात पर गर्व होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें भारत भूमि में जन्म दिया है। ईश्वर ने हमें भारत की सेवा और इसकी शिखर यात्रा में हमारी भूमिका निभाने के लिए चुना है। हमें प्राचीन मूल्यों को आधुनिक स्वरूप में अपनाते हुये अपनी विरासत को आधुनिक ढंग से पुर्नपरिभाषित करना होगा। हमें एक राष्ट्र के रूप में पुरानी पड़ चुकी सोच और मान्यताओं का परिमार्जन भी करना होगा। हमें हमारे समाज को पेशेवर निराशावादियों के दबाव से, Professional Pessimists के दबाव से बाहर निकालना है। हमें याद रखना है, नकारात्मकता से मुक्ति, सफलता की सिद्धि तक पहुंचने के लिए पहली जड़ी-बूटी है। सकारात्मकता की गोद में ही सफलता पलती है।

भारत की अनंत और अमर शक्ति के प्रति मेरी आस्था, श्रद्धा और विश्वास भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मैंने पिछले 10 वर्षों में भारत के इस सामर्थ्य को और ज्यादा बढ़ते देखा है और ज्यादा अनुभव किया है। जिस तरह हमने 20वीं सदी के चौथे-पांचवे दशक को अपनी आजादी के लिए प्रयोग किया, उसी तरह 21वीं सदी के इन 25 वर्षों में हमें विकसित भारत की नींव रखनी है। स्वतंत्रता संग्राम के समय देशवासियों के सामने बलिदान का समय था। आज बलिदान का नहीं निरंतर योगदान का समय है।

स्वामी विवेकानंद ने 1897 में कहा था कि हमें अगले 50 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करने होंगे। उनके इस आव्हान के ठीक 50 वर्ष बाद, 1947 में भारत आजाद हो गया। आज हमारे पास वैसा ही स्वर्णिम अवसर है। हम अगले 25 वर्ष केवल और केवल राष्ट्र के लिए समर्पित करें। हमारे ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों और आने वाली शताब्दियों के लिए नए भारत की सुदृढ़ नींव बनकर अमर रहेंगे। मैं देश की ऊर्जा को देखकर ये कह सकता हूँ कि लक्ष्य अब दूर नहीं है। आइए, तेज कदमों से चलें... मिलकर चलें, भारत को विकसित बनाएं।

(यह विचार पीएम मोदी ने 1 जून को कन्याकुमारी से दिल्ली लौटते समय विमान में शाम 4.15 बजे से 7 बजे के बीच लिखे हैं।)

जनता ने उदारता से दिया भाजपा को आशीर्वाद- डॉ. मोहन यादव

जनता ने बड़ी उदारता से भाजपा को इस चुनाव में अपना आशीर्वाद दिया है। इंदौर में श्री शंकर लालवानी जी 11 लाख, 11 हजार से अधिक वोटों से जीते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने 8 लाख 21 हजार से अधिक वोटों से जीत दर्ज की है। प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी 5 लाख 41 हजार से अधिक वोटों से जीते। 29 सीटों में से 25 सीटों पर हमारे प्रत्याशी 1 लाख से अधिक वोटों से जीते हैं। शेष 4 में से भी 3 सीटों पर हमारे उम्मीदवार 50 हजार से अधिक वोटों से जीते हैं।

इस बार की जीत 2019 की तुलना में कई मायनों में अलग है। आजादी के बाद संभवतः पहली बार हमने मुख्य चुनाव में छिंदवाड़ा में जीत दर्ज की है। दिग्विजय सिंह जैसे कांग्रेस के राष्ट्रीय स्तर के नेता जो दो बार प्रदेश के मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष भी रहे हैं, इस चुनाव में धराशायी हो गए हैं। पिछले चुनाव में जनता ने भोपाल से उनका हिसाब किया था और इस बार उन्हें उनके घर ले जाकर छोड़ दिया। झाबुआ-रतलाम में हम पिछली बार एक लाख वोटों से जीते थे, इस बार जनता ने दो लाख से अधिक वोटों से कांतिलाल भूरिया को हराया। इसी तरह मंडला में भी कुलस्ते जी ने बड़ी जीत हासिल की है। इंदौर, खजुराहो, विदिशा, मंदसौर, देवास, उज्जैन, बैतूल, दमोह, टीकमगढ़, सागर, भिंड, गुना जैसी सीटों पर हमने पिछली बार से बड़ी जीत हासिल की है।

देश में यह पहला अवसर है, जब कोई गैर कांग्रेसी सरकार तीसरी बार रिपीट हो रही है। इससे पहले पं. जवाहरलाल नेहरू 17 साल तक प्रधानमंत्री रहे। उनके बाद इंदिरा गांधी 15 साल, 364 दिन प्रधानमंत्री रहीं। अब हमारे लोकप्रिय नेता श्री नरेंद्र मोदी जी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे। उन्होंने कहा कि जनता ने भाजपा की बात मानकर उस पर भरोसा दिखाया है और हम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनाएंगे। हमने जनता की सेवा का जो संकल्प लिया है उसे पूरा करेंगे और दुनिया में भारत का मान बढ़ाने के लिए काम करेंगे।

इस चुनाव में हमारी लड़ाई कांग्रेस और उसके सहयोगियों के परिवारवाद के खिलाफ थी। कांग्रेस के लोग भाजपा पर संविधान बदलने का आरोप लगाते हैं, लेकिन उन्हें यह बताना चाहिए कि डॉ. अंबेडकर का बनाया मूल संविधान जिसके पृष्ठ पर श्री रामदरबार का चित्र था, वो किसने हटाया? लोकसभा चुनाव में ऐसे ही मुद्दों पर बहस चली, जिसमें जनता ने भाजपा पर विश्वास जताया और कांग्रेस को धूल चटाई। हमारे कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के अहंकार और बड़बोलेपन का जवाब दिया। ▪

केंद्रीय मंत्रिपरिषद

प्रधानमंत्री - श्री नरेन्द्र मोदी

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग,सभी महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दे, और अन्य सभी विभाग, जो किसी मंत्री को आवंटित नहीं किए गए हैं।

कैबिनेट मंत्री

1. **श्री राजनाथ सिंह**
   रक्षा मंत्री
2. **श्री अमित शाह**
   गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री।
3. **श्री नितिन जयराम गडकरी**
   सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री।
4. **श्री जगत प्रकाश नड्डा**
   स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, तथा रसायन और उर्वरक मंत्री।
5. **श्री शिवराज सिंह चौहान**
   कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और ग्रामीण विकास मंत्री।
6. **श्रीमती निर्मला सीतारमण**
   वित्त मंत्री और कॉर्पोरेट कार्य मंत्री।
7. **डॉ. सुब्रह्मण्यम जयशंकर**
   विदेश मंत्री।
8. **श्री मनोहर लाल**
   आवासन और शहरी कार्य मंत्री तथा ऊर्जा मंत्री।
9. **श्री एच. डी. कुमारस्वामी**
   भारी उद्योग मंत्री और इस्पात मंत्री।
10. **श्री पीयूष गोयल**
    वाणिज्य और उद्योग मंत्री।
11. **श्री धर्मेंद्र प्रधान**
    शिक्षा मंत्री।
12. **श्री जीतन राम मांझी**
    सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री।
13. **श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह**
    पंचायती राज मंत्री तथा मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री।
14. **श्री सर्बानंद सोनोवाल**
    पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री।
15. **डॉ. वीरेंद्र कुमार**
    सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री।
16. **श्री किंजरापु राममोहन नायडू**
    नागर विमानन मंत्री।
17. **श्री प्रल्हाद जोशी**
    उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री।
18. **श्री जुएल ओराम**
    जनजातीय कार्य मंत्री।
19. **श्री गिरिराज सिंह**
    वस्त्र मंत्री।
20. **श्री अश्विनी वैष्णव**
    रेल मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री।
21. **श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया**
    संचार मंत्री तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री।
22. **श्री भूपेंद्र यादव**
    पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री।
23. **श्री गजेंद्र सिंह शेखावत**
    संस्कृति मंत्री तथा पर्यटन मंत्री।
24. **श्रीमती अन्नपूर्णा देवी**
    महिला एवं बाल विकास मंत्री
25. **श्री किरेन रिजीजू**
    संसदीय कार्य मंत्री तथा अल्पसंख्यक कार्य मंत्री।
26. **श्री हरदीप सिंह पुरी**
    पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री
27. **डॉ. मनसुख मांडविया**
    श्रम एवं रोजगार मंत्री तथा युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री।
28. **श्री जी. किशन रेड्डी**
    कोयला मंत्री तथा खान मंत्री।
29. **श्री चिराग पासवान**
    खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री।
30. **श्री सी. आर. पाटिल**
    जल शक्ति मंत्री।

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

1. **श्री राव इंद्रजीत सिंह**
   सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) योजना मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संस्कृति मंत्रालय के राज्य मंत्री।
2. **डॉ. जितेंद्र सिंह**
   विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री, परमाणु ऊर्जा विभाग में राज्य मंत्री और अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री।
3. **श्री अर्जुन राम मेघवाल**
   विधि एवं न्याय मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री।
4. **श्री जाधव प्रतापराव गणपतराव**
   आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री।
5. **श्री जयंत चौधरी**
   कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री।

राज्य मंत्री

1. **श्री जितिन प्रसाद**
   वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री।
2. **श्री श्रीपाद येसो नाईक**
   विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री और नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय में राज्य मंत्री।
3. **श्री पंकज चौधरी**
   वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री।
4. **श्री कृष्णपाल**
   सहकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री।
5. **श्री रामदास अठावले**
   सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री।
6. **श्री रामनाथ ठाकुर**
   कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री।
7. **श्री नित्यानन्द राय**
   गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री।
8. **श्रीमती अनुप्रिया पटेल**
   स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण में राज्य मंत्री और रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय में राज्यमंत्री।
9. **श्री वी. सोमन्ना**
   जल शक्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री और रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री।
10. **डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी**
    ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री और संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री।
11. **प्रोफेसर एस.पी. सिंह बघेल**
    मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय में राज्य मंत्री और पंचायती राज मंत्रालय में राज्य मंत्री।
12. **सुश्री शोभा करंदलाजे**
    सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय में राज्य मंत्री।
13. **श्री कीर्तिवर्धन सिंह**
    पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय में राज्य मंत्री और विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री।
14. **श्री बी.एल. वर्मा**
    उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री।

15. **श्री शान्तनु ठाकुर**
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री।

16. **श्री सुरेश गोपी**
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री और पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री।

17. **डॉ. एल. मुरुगन**
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री।

18. **श्री अजय टम्टा**
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री।

19. **श्री बंदी संजय कुमार**
गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री।

20. **श्री कमलेश पासवान**
ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री।

21. **श्री भागीरथ चौधरी**
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री।

22. **श्री सतीश चंद्र दुबे**
कोयला मंत्रालय में राज्य मंत्री और खान मंत्रालय में राज्य मंत्री।

23. **श्री संजय सेठ**
रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री।

24. **श्री रवनीत सिंह**
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री और रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री।

25. **श्री दुर्गादास उइके**
जनजातीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री।

26. **श्रीमती रक्षडसे रक्षा निखिल**
युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री।

27. **श्री सुकांता मजूमदार**
शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री।

28. **श्रीमती सावित्री ठाकुर**
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री।

29. **श्री तोखन साह**
आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री।

30. **श्री राज भूषण चौधरी**
जल शक्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री।

31. **श्री भूपति राजू श्रीनिवास वर्मा**
भारी उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री और इस्पात मंत्रालय में राज्य मंत्री।

32. **श्री हर्ष मल्होत्रा**
कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री और सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री।

33. **श्रीमती निमुबेन जयंतीभाई बांभणिया**
उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्यमंत्री।

34. **श्री मुरलीधर मोहोल**
सहकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री और नागर विमानन मंत्रालय में राज्य मंत्री।

35. **श्री जॉर्ज कुरियन**
अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय में राज्य मंत्री।

36. **श्री पबित्रा मार्गेरिटा**
विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री और वस्त्र मंत्रालय में राज्य मंत्री।

प्रधानमंत्री की शपथ के बाद मना उत्सव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के पश्चात प्रदेश भर में मंडल स्तर पर उत्सव मनाया गया। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की आजादी के बाद गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री के तौर पर लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनकर इतिहास रचा है, प्रदेश में शपथ ग्रहण का उत्सव मनाया गया। भाजपा द्वारा प्रदेश भर में मंडल स्तर तक रैली निकाली गई व आतिशबाजी के बाद लोगों का मुंह मीठा कराया गया। मिठाई बांटकर लोगों ने श्री नरेन्द्र मोदी जी के लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने की शुभकामनाएं दी। मध्यप्रदेश की जनता ने श्री नरेन्द्र मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर भाजपा उम्मीदवारों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर ऐतिहासिक विजय दिलाई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनकर इतिहास रच दिया है। श्री नरेन्द्र मोदी जी के बीते दस वर्षों की उपलब्धियों, गरीब कल्याण और जनकल्याणकारी योजनाओं और गारंटियों पर विश्वास करके भाजपा को वोट देने वाली जनता जर्नादन को भी मिठाई बांटकर भाजपा को वोट देने के लिए अभिनंदन किया। देश के लिए यह दिन ऐतिहासिक है, क्योंकि आजादी के बाद पहली बार कोई गैर कांग्रेसी व्यक्ति ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है। ▪

आकांक्षाओं पर खरे उतरेंगे नवनियुक्त मंत्री

प्रधानमंत्री जी ने अपने मंत्रिमंडल में मध्यप्रदेश को प्रतिनिधित्व देकर प्रदेश की जनता का मान बढ़ाया है। लोकसभा चुनाव में प्रदेश की सभी 29 सीटों पर भाजपा को ऐतिहासिक विजय दिलाकर प्रदेश की जनता ने बताया कि एमपी के मन में मोदी हैं। उसी प्रकार मंत्रिमण्डल में समुचित प्रतिनिधित्व देकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बताया कि मोदी जी के मन में एमपी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नए मंत्रिमंडल में पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री शिवराज सिंह चौहान, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, डा. एल मुरुगन, श्री दुर्गादास उईके एवं श्रीमती सावित्री ठाकुर को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने न्यू इंडिया का जो सपना देखा है, उसे साकार करने में सभी नेताओं को सक्रिय सहयोग देने का अवसर मिला है और उनके दीर्घ अनुभवों का लाभ भी देश को मिलेगा। मध्यप्रदेश की जनता के लिए यह गौरव का विषय है कि मोदी सरकार में तीसरी बार भी मध्यप्रदेश को बेहतर प्रतिनिधित्व मिला है। ▪

हर दिन बदलती दुनिया में कहां खड़ा है भारत

एस. जयशंकर

आज दुनिया में काफी उथल-पुथल मची है। कई देश कोविड महामारी से हुए सामाजिक-आर्थिक नुकसान से उबरने में लगे हैं। यूक्रेन में चल रहे संघर्ष से ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा पर गंभीर असर पड़ा है। अक्टूबर 2023 में इजराइल पर हुए आतंकी हमले से पश्चिम एशिया में शुरू हुई लड़ाई गंभीर और व्यापक रूप ले सकती है। लाल सागर में ड्रोन और मिसाइल हमले वैश्विक शिपिंग को अस्त-व्यस्त कर रहे हैं। यहां तक कि अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती की नई लहर और खतरनाक हो गई है। एशिया में क्षेत्रीय दावे और कानूनों और समझौतों की अवहेलना ने नए तनाव पैदा कर दिए हैं।

भारत के लिए ज्यादा अनिश्चितताएं चीन के साथ LAC (Line of Actual Control) पर दबाव, सीमा पार से आतंकवाद के खतरे और म्यांमार की सीमा पर अस्थिरता से बढ़ी हैं। हालांकि इनमें से प्रत्येक को उचित प्रतिक्रिया दी गई है। लेकिन कुल मिलाकर ये स्थितियां आने वाले दिनों में एक मजबूत, समझदार और सक्षम नेतृत्व की जरूरत को स्पष्ट करती हैं।

कोविड युग ने अति-केंद्रीकरण के खतरों को प्रदर्शित किया है, चाहे वो manufacturing sector हो या technology। महत्वपूर्ण और उभरती टेक्नॉलाजी का दायरा इसे और गंभीर बना देता है। ऐसे में अच्छा यही होगा कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था भी जोखिम से मुक्त हो। ऐसा केवल विभिन्न क्षेत्रों में 'मेक इन इंडिया' को गति देने व लचीली और विश्वसनीय सप्लाई चेन से जुड़कर ही किया जा सकता है।

आज भारत अपने उम्दा बुनियादी ढांचे, बेहतर कारोबारी माहौल और अपेक्षित प्रतिभा की बदौलत आकर्षक निवेश गंतव्य है, लेकिन इसकी वजह हमारी राजनीतिक स्थिरता और नीतिगत पूर्वानुमान है। पिछले दशक में जमीनी स्तर पर सुधार और डिलिवरी ही विदेशों में हमारी विश्वसनीयता के स्त्रोत रहे हैं। कई मायनों में वैश्वीकरण ने एक अंतरराष्ट्रीय वर्क प्लेस भी बनाया है, जिसका उपयोग भारत अपनी बेहतरी के लिए कर सकता है। इसके लिए हमारे कौशल बेस को बढ़ाना, मोबिलिटी समझौते करना और विदेश में रह रहे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा अहम तत्व हैं।

डिजिटल क्षेत्र में भारत को एक विश्वसनीय और पारदर्शी देश के रूप में अपने रेकॉर्ड को और आगे ले जाना है। इसका मतलब हमें सेमीकंडक्टर क्षमताओं को बढ़ाना और सही डेटा पॉलिसी को अपनाना होगा।

खुद को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, ड्रोन, अंतरिक्ष और ग्रीन टेक्नॉलाजी के युग के लिए भी तैयार करना होगा। साथ ही, देश की स्वास्थ्य, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना होगा। इसके लिए दूरदर्शी नेतृत्व की जरूरत है, जो टेक्नॉलाजी की परिवर्तनकारी क्षमता को समझता हो और मजबूत विकास के लिए प्रतिबद्ध हो।

डिजिटल क्षेत्र में भारत को एक विश्वसनीय और पारदर्शी देश के रूप में अपने रेकॉर्ड को और आगे ले जाना है। इसका मतलब हमें सेमीकंडक्टर क्षमताओं को बढ़ाना और सही डेटा पॉलिसी को अपनाना होगा। खुद को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी,

ड्रोन, अंतरिक्ष और ग्रीन टेक्नॉलाजी के युग के लिए भी तैयार करना होगा। साथ ही, देश की स्वास्थ्य, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना होगा। इसके लिए दूरदर्शी नेतृत्व की जरूरत है, जो टेक्नॉलाजी की परिवर्तनकारी क्षमता को समझता हो और मजबूत विकास के लिए प्रतिबद्ध हो।

आज भारत अपने उम्दा बुनियादी ढांचे,

बेहतर कारोबारी माहौल और अपेक्षित प्रतिभा की बदौलत आकर्षक निवेश गंतव्य है, लेकिन इसकी वजह हमारी राजनीतिक स्थिरता और नीतिगत पूर्वानुमान है। पिछले दशक में जमीनी स्तर पर सुधार और डिलिवरी ही विदेशों में हमारी विश्वसनीयता के स्त्रोत रहे हैं। कई मायनों में वैश्वीकरण ने एक अंतरराष्ट्रीय वर्क प्लेस भी बनाया है, जिसका उपयोग भारत अपनी बेहतरी के लिए कर सकता है। इसके लिए हमारे कौशल बेस को बढ़ाना, मोबिलिटी समझौते करना और विदेश में रह रहे भारतीय नागरिकों की सुरक्षा अहम तत्व हैं।

यह स्वाभाविक है कि दुनिया भारतीय लोकसभा चुनाव में गहरी दिलचस्पी ले। आखिरकार यह मानव इतिहास की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया है। यह चुनाव बाकी देशों के लिए एक बढ़ते प्रभाव वाले देश में आयोजित हो रहा है। इसके अलावा, हमारी चुनावी मशीनरी की क्वॉलिटी अन्य देशों के लिए उदाहरण है। महत्वपूर्ण है कि चुनाव में दिलचस्पी और हस्तक्षेप के बीच की रेखा को समझा जाए और उसका सम्मान किया जाए। जब अधिक जिम्मेदार लोग चुनिंदा मुद्दों पर टिप्पणी करते हैं, तो वे स्वयं के निहितार्थों को भी ध्यान में रखते हुए ऐसा कर सकते हैं। यह जीवन की सच्चाई है कि कई अन्य गतिविधियों की तरह ही राजनीति का भी वैश्वीकरण हो गया है, लेकिन व्यवस्था की आलोचना करने वाले अपने घरेलू चुनाव के नतीजों को प्रभावित करने के लिए अगर बाहरी ताकतों को आमंत्रित करते हैं तो इससे हमें कोई लाभ नहीं होगा।

यह अमृत काल का पहला आम चुनाव है और युवाओं को इसके महत्व को पहचानना होगा। पिछले दशक ने हमें विकसित भारत के लिए गंभीरता से उम्मीद करने को एक आधार दिया है। हमारे विकास की नई गति को इसकी समावेशी प्रकृति और प्रौद्योगिकी की छलांग लगाने वाली क्षमता से बल मिला है। पहले के विपरीत, सुधार और आधुनिकीकरण को संकीर्ण रूप से परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन इसमें डोमेन की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। मानव संसाधनों का पोषण, entrepreneurship को बढ़ावा देना और जीवनयापन की आसानी को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

औपचारिक और अनौपचारिक, अर्थव्यवस्था के दोनों ही क्षेत्रों में अवसर बढ़ रहे हैं। यहां तक कि नए फोकस क्षेत्र और वैल्यू एडिशन भी सामने आ रहे हैं। दुनिया ध्यान दे रही है कि हमारी डिजिटल रूप से सक्षम डिलिवरी ने बड़े पैमाने पर सोशल वेलफेयर सिस्टम (सामाजिक कल्याण प्रणाली) बनाया है, जिसकी पहले कल्पना नहीं की जा सकती थी। चाहे कोवैक्सीन हो या कोविन, 5G स्टैक या UPI, चंद्रयान या गगनयान मिशन, हम तेजी से वैश्विक मानकों से मेल बना रहे हैं।

जैसे-जैसे भारत अपने भविष्यों के बारे में निर्णय लेने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, यह जरूरी है कि हम सभी इसे पूरी तरह से समझें कि दांव पर क्या लगा है। भारत न केवल दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, बल्कि यह पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी है, जिसके जल्द ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है। दुनिया चुनौतियां और अवसर दोनों प्रदान करती है और उन्हें व्यापक रूप से संबोधित करने के लिए प्रधानमंत्री के दृढ़ आत्मविश्वास और अनुभवी नेतृत्व की आवश्यकता है। जैसे ही हम अपनी राजनीतिक पसंद व्यक्त करते हैं, हम वैश्विक व्यवस्था की दिशा भी तय कर रहे होते हैं। दुनिया इंतजार कर रही है और उम्मीद कर रही है कि फैसला स्पष्ट और निर्णायक होगा। ▪

(लेखक विदेश मंत्री हैं)

एक बरस बीत गया

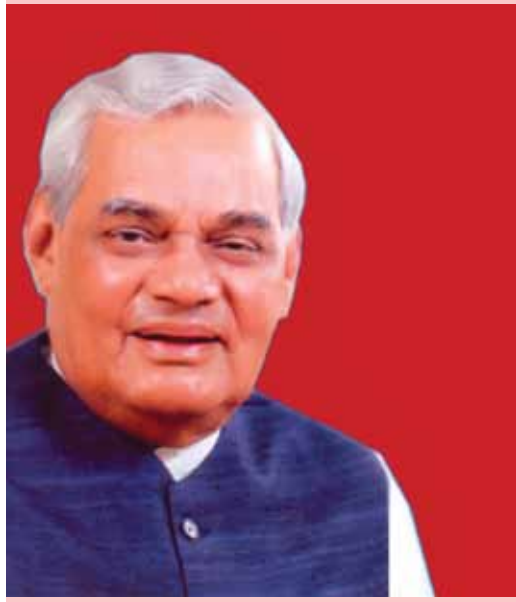

अटल बिहारी वाजपेयी

एक बरस बीत गया।

झुलसाता जेठ मास
शरद चाँदनी उदास
सिसकी भरते सावन का
अन्तर्घट रीत गया
एक बरस बीत गया।

सीकचों में सिमटा जग
किन्तु विकल प्राण विहग
धरती से अम्बर तक
गूँज मुक्ति गीत गया,

एक बरस बीत गया।
पथ निहारते नयन
गिनते दिन, पल, छिन
लौट कभी आएगा
मन का जो मीत गया,

एक बरस बीत गया।

समग्र विकास को समर्पित एनडीए सरकार

पीएम किसान और पीएम फसल बीमा जैसी योजनाओं से आज 11 करोड़ से अधिक किसान लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में लैंगिक समानता को प्रमुखता दी जा रही है। लंबे समय से प्रतीक्षित नारी शक्ति वंदन अधिनियम का पारित होना महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हरदीप सिंह पुरी

पिछले स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले से अपने संबोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संकल्प लिया कि वर्ष 2047 में जब देश स्वतंत्रता के सौ वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा होगा तब तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। दस वर्ष पहले तक यह दावा असंभव लगता। वर्ष 2013 में भारतीय अर्थव्यवस्था को 'फ्रैजाइल फाइव' करार देकर नाजुक अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाने लगा। उसके उलट भारत अभी विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जल्द ही तीसरी सबसे बड़ी आर्थिकी बनने की राह पर है। यह कैसे संभव हुआ? पिछले दस वर्षों में मोदी सरकार ने विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक कल्याण कार्यक्रम लागू किया है, जिसका उद्देश्य लोगों के जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने और देश की उत्पादक क्षमता में सुधार लाना है। सरकार का दृष्टिकोण उसकी 'परिपूर्णता की राजनीति' में निहित है, जिसमें बुनियादी ढांचा सुरक्षा, ऊर्जा सामर्थ्य, हरित अर्थव्यवस्था, डिजिटल कनेक्टिविटी और वित्तीय समावेशन पर जोर है। योजना बनाना एक बात है और उसे धरातल पर उतारना दूसरी बात। मोदी सरकार इन दोनों ही मोर्चों पर खरी उतरी है। परिणाम स्वरूप पिछले दस वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी के दायरे से बाहर निकले हैं। 'मोदी की गारंटी' आम नागरिकों को उम्मीदों और आकांक्षाओं के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

इस सफलता में हमारे समाज के चार स्तंभों गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाओं का सशक्तीकरण महत्वपूर्ण रहा है। एक समय गरीबी के चलते पहचाना जाने वाला भारत अब समृद्धि की राह पर है। गरीबों की भलाई के लिए कोविड महामारी के समय मोदी सरकार ने 80 करोड़ भारतीयों को मुफ्त राशन देने की जो पहल की थी वह अगले पांच वर्षों तक जारी रहेगी। शहरी क्षेत्र में पीएम स्वनिधि योजना ने उन स्ट्रीट वेंडरों को राहत प्रदान की, जिनके सामने एकाएक रोजगार की चुनौतियां आ गई थीं। इस योजना में अब तक 63 लाख से अधिक लाभार्थियों को 11,300 करोड़ रुपये ऋण प्रदान किया है। साथ ही इसने शहरी गरीबों को डिजिटल रुप से साक्षर होने में सक्षम बनाया है। पीएम किसान और पीएम फसल बीमा जैसी योजनाओं से आज 11 करोड़ से अधिक किसान लाभान्वित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदीजी के नेतृत्व में लैंगिक

समानता को प्रमुखता दी जा रही है। लंबे समय से प्रतीक्षित नारी शक्ति वंदन अधिनियम का पारित होना महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत 11 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया और जल जीवन मिशन एवं अमृत मिशन के तहत लगभग 14 करोड़ नल-जल कनेक्शन दिए गए। एक दशक पहले तक नल से जल की पहुंच केवल 17 प्रतिशत परिवारों तक थी, जो आंकड़ा बढ़कर अब 70 प्रतिशत तक हो गया है। पीएम आवास योजना के तहत लगभग चार करोड़ आवास निर्मित किए गए हैं। मोदी सरकार ने तीसरे कार्यकाल में तीन करोड़ और नए घर बनने का वादा किया है। उज्ज्वला योजना के तहत 10 करोड़ से अधिक एलपीजी कनेक्शन मंजूर किए जा चुके हैं, जिससे धुआं-रहित रसोई की सुविधा लगभग सभी तक पहुंच चुकी है, जो 2014 तक केवल 55.9 प्रतिशत परिवारों तक सीमित थी। महिलाएं इन योजनाओं की सबसे बड़ी लाभार्थी बनकर उभरी हैं, जिसने उनके जीवन को गरिमापूर्ण तरीके से सुगमता प्रदान की है।

वहीं, आयुष्मान भारत जैसी योजना के माध्यम से स्वास्थ्य पर खर्च करीब 25 प्रतिशत कम हो गया है। निम्न-मध्यम वर्गीय भारतीयों को बीमारी के चलते गरीबी का दोहरा झटका झेलना पड़ता था, लेकिन इस योजना के जरिये प्रति वर्ष 55 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को पांच लाख रुपये तक की मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इससे भारतीय परिवारों को सालाना लगभग 60,000 करोड़ रुपये की बचत हुई है।

सामाजिक कल्याण योजनाओं के साथ-साथ बुनियादी ढांचे पर भी जोर दिया गया है। 2013-14 की तुलना में पूंजीगत व्यय में

लगभग तीन गुना वृद्धि हुई हैं, जो 3.92 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 11.1 लाख करोड़ रुपये हो गया है। राजमार्गों की लंबाई 60 प्रतिशत बढ़ गई है। समूचे ग्रामीण इलाकों में करीब-करीब पक्की सड़कें बन गई हैं। सभी गांवों तक बिजली पहुंच गई है।

हवाई अड्डों की संख्या दोगुनी हो गई है। मेट्रो रेल नेटवर्क लगभग चौगुना हो गया है। विश्व बैंक रैंकिंग के अनुसार हमारे लाजिस्टिक और औद्योगिक परिचालन में काफी सुधार हुआ है। देश में 390 नए विश्वविद्यालय स्थापित किये गये हैं।

सामाजिक कल्याण योजनाओं के साथ-साथ बुनियादी ढांचे पर भी जोर दिया गया है। 2013-14 की तुलना में पूंजीगत व्यय में

लगभग तीन गुना वृद्धि हुई हैं, जो 3.92 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 11.1 लाख करोड़ रुपये हो गया है।

सात नए आइआइएम और आइआइटी की स्थापना की गई है। एम्स की संख्या में तिगुनी वृद्धि हुई है। 51 करोड़ से अधिक जनधन खाते खोले गए हैं। जनधन, आधार और मोबाइल यानी जैम के जरिये 33.43 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम सीधे लाभार्थियों के खातों में भेजी गई है। जीएसटी, आइबीसी, परिसंपति मौद्रीकरण, श्रम कानून सुधार, स्टार्टअप इंडिया और पीएलआइ जैसे आर्थिक नीतियां अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करने वाली सिद्ध हुई हैं। प्रति व्यक्ति आय भी छह गुना बढ़कर 15,000 डालर तक पहुंचने की संभावना है।

वैश्विक निवेशक भी इस आशावाद को साझा करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारत को रिकार्ड तोड़ एफडीआइ प्राप्त हो रहा है। घरेलू शासन के साथ-साथ वैश्विक शासन के मामले पर भी प्रधानमंत्री मोदीजी के राजनैतिक कौशल और दूरदर्शिता को सार्वभौमिक प्रशंसा मिली है।

मोदी सरकार की उपलब्धियां यही सिद्ध करती है कि सामाजिक न्याय को चरितार्थ करने वाली सर्वसमावेशी नीति ही विकसित भारत के सपने को साकार करने में सक्षम है। हमें विकास के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए देशहित में सक्रिय रहना होगा। 'राष्ट्र प्रथम' हमारे लिए सर्वोच्च मंत्र है। ▪

(लेखक केंद्रीय मंत्री हैं)

युवाओं को दिशा देतीं मोदी सरकार की क्रांतिकारी योजनाएं

अरुण सिंह

अमृतकाल के इस दौर में भारत को विकसित बनाने का दारोमदार युवाओं पर है। इसलिए 2014 में नरेन्द्र मोदी सरकार के केंद्र में आते ही युवा शक्ति पर विशेष रूप से फोकस किया गया था।

युवाओं के पूर्ण सामर्थ्य को निखारने और पहचान देने के साथ इसे देश के आर्थिक विकास व समृद्धि में उपयोग करने हेतु मोदी सरकार की कई योजनाएं देश में सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं एवं युवाओं को इसका पूर्ण लाभ मिल रहा है। आइये, इन योजनाओं और उसके लाभार्थियों की चर्चा करते हैं-

कौशल विकास योजना

पीएम कौशल विकास योजना दो तरह के प्रशिक्षणों (शार्ट-टर्म ट्रेनिंग एवं अपस्किलिंग) के माध्यम से कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए है। जुलाई, 2015 में प्रारम्भ होने के बाद से अक्टूबर, 2023 तक 1.4 करोड़ से अधिक युवाओं को इस योजना के तहत प्रशिक्षित किया गया है।

राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप प्रमोशन योजना युवाओं को उद्योग और नौकरी पर पेशेवर प्रशिक्षण/व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने में मदद करती है एवं इस योजना के माध्यम से 28 लाख से अधिक युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

समाज के कम शिक्षित वर्ग को त्वरित रूप से देश के विकास में भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु जन शिक्षण संस्थान योजना के अंतर्गत गैर-साक्षरों, नव-साक्षरों और ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में 15-45 वर्ष के आयु वर्ग के 8वीं कक्षा, प्रारंभिक स्तर वाले और 12वीं कक्षा तक स्कूल छोड़ने वाले व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है। वित्त वर्ष 2018-19 से 22.58 लाख से अधिक व्यक्तियों को कौशल प्रशिक्षण से सशक्त बनाया गया है।

स्वावलम्बन से युवाओं को शक्ति प्रदान करते हुए प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से छोटे कारोबारी और युवाओं को स्वरोजगार के लिए लोन प्रदान किया गया।

कोई भी व्यक्ति जो स्वयं का व्यवसाय शुरू करना चाहता है, तो वह प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना के तहत 10 लाख रुपए तक का मुद्रा लोन प्राप्त कर सकता है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत अब तक 19 करोड़ युवाओं को कर्ज दिया जा चुका है। अब सरकार का लक्ष्य योजना का विस्तार करते हुए 30 करोड़ युवाओं तक पहुंचने का है।

शिक्षण संस्थानों एवं कौशल विकास का मजबूत तंत्र

मोदी सरकार के कार्यकाल में हर साल एक नया IIT और IIM खोला गया, 10 वर्षों में प्रति सप्ताह एक विश्वविद्यालय स्थापित किया गया एवं हर दिन दो कॉलेज स्थापित किये गए। 16 नए IIIT खोलकर डिजिटल इंफ्रा आधारित औद्योगिक क्रांति की दिशा में मजबूत कदम उठाया गया जो चौथी औद्योगिक क्रांति में एक निर्णायक कदम सिद्ध होगा। चिकित्सा क्षेत्र में 53% MBBS सीटों तथा 80% परास्नातक (चिकित्सा) सीटों में बढ़ोत्तरी करते हुए अधिक डॉक्टरों की आपूर्ति सुनिश्चित करते हुए स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा एवं रोजगार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

CUET के द्वारा सभी विश्वविद्यालयों में समान प्रवेश परीक्षा सुनिश्चित करते हुए मानकीकरण किया गया। सरकार के प्रयासों से उच्च शिक्षा में महिलाओं का प्रवेश 28%

बढ़ा है। कौशल भारत मिशन के तहत देश भर में स्थित 34,468 PMKVY (प्रधानमंत्री कौशल केंद्रों सहित), 309 जन शिक्षण संस्थानों, 15,016 आईटीआई और 42,453 NAPS प्रतिष्ठानों द्वारा कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर भारत को श्रम शक्ति के रूप में स्थापित कर दुनिया भर की रोजगार आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से स्वावलम्बन

स्वावलम्बन से युवाओं को शक्ति प्रदान करते हुए प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से छोटे कारोबारी और युवाओं को स्वरोजगार के लिए लोन प्रदान किया गया। कोई भी व्यक्ति जो स्वयं का व्यवसाय शुरू करना चाहता है, तो वह प्रधानमंत्री मुद्रा लोन योजना के तहत 10 लाख रुपए तक का मुद्रा लोन प्राप्त कर सकता है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत अब तक 19 करोड़ युवाओं को कर्ज दिया जा चुका है। अब सरकार का लक्ष्य योजना का विस्तार करते हुए 30 करोड़ युवाओं तक पहुंचने का है। यानी कि 11 करोड़ नए युवाओं को इस योजना के तहत कर्ज दिया जाएगा। उद्यमियों के लिए बिना गारंटी 50 लाख रुपए तक के ऋण की योजना भी लाई जाएगी।

रोजगार सृजन से विकसित भारत

2017 और 2022 के बीच कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में 4.69 करोड़ नए ग्राहकों का शामिल होना रोजगार सृजन का एक प्रत्यक्ष एवं उल्लेखनीय प्रमाण है। 15 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को रोजगार देने में एमएसएमई क्षेत्र ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिसमें 3.4 करोड़ महिलाएं हैं। खादी उद्योग ने भी काफी प्रभाव डाला है, 2014 से 2022 तक 1.75 करोड़ से अधिक नई नौकरियां पैदा की हैं, अकेले चालू वित्तीय वर्ष में 9.54 लाख नई नौकरियां पैदा करके एक ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल किया है।

पीएम मुद्रा योजना ने 2015 और 2018 के बीच 1.12 करोड़ अतिरिक्त रोजगार सृजन किया। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था में 2014 और 2019 के बीच लगभग 6.24 करोड़ नौकरियों का सृजन हुआ। पर्यटन क्षेत्र ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, 2017 से 2020 तक 1.9 करोड़ अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा कीं। पीएमकेवीवाई ने 24.51 लाख से अधिक युवाओं की नियुक्ति की सुविधा प्रदान की, जबकि दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (डीडीयू-जीकेवाई) के कारण 9.39 लाख से अधिक युवाओं को नौकरी मिली।

स्टार्टअप इंडिया स्टैंडअप इंडिया

मोदी सरकार की योजनाओं से भारत में इस समय 1.15 लाख से अधिक पंजीकृत स्टार्टअप हैं, जो 2014 में मात्र 350 थे। स्टार्टअप इंडिया और स्टैंड-अप इंडिया जैसी सरकारी पहल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके परिणाम स्वरूप 100 से अधिक यूनिकॉर्न भारत में पैदा हुए हैं। 52% स्टार्टअप टियर-2 और टियर-3 शहरों से हैं। ये स्टार्टअप 10.34 लाख से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करते हैं और ई-कॉमर्स, फिनटेक, एडटेक और स्वास्थ्य तकनीक जैसे क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ावा देते हैं।

नवाचार को बढ़ावा

आज देश के स्कूलों में 10,000 अटल टिंकरिंग लैब्स जैसे प्लेटफार्मों द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर, 56 विविध क्षेत्रों में नवाचार फल-फूल रहा है और देश में पेटेंट की संख्या में वृद्धि देखी गई है। भारत ने ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 40वां स्थान हासिल किया है, जो विशेष रूप से युवाओं के बीच नवाचार की बढ़ती भावना का प्रमाण है।

आत्मनिर्भर युवा से आत्मनिर्भर भारत

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना देश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम प्रकार के व्यवसाय शुरू करने वालों हेतु है। वे इस योजना के माध्यम से 10 लाख रुपए तक का लोन ले सकते हैं। इसके साथ ही इस योजना में लोन पर 25 से 35 प्रतिशत तक की सब्सिडी का भी प्रावधान है। मोदी सरकार ने कोविड से उपजे आर्थिक संकट से देश के युवाओं को

निकालने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत योजना' की शुरुआत की है। 20 लाख करोड़ रुपए की इस योजना के तहत नौकरी से लेकर व्यवसाय तक के सभी क्षेत्रों को कवर करके लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया।

डिजिटल इंडिया मिशन

आरोग्य सेतु ऐप को 10 करोड़ से अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका है। यह देश के डिजिटल आकांक्षाओं की एक बानगी है। इसी डिजिटल सामर्थ्य का प्रयोग करने हेतु सरकार द्वारा 2,74,246 किमी ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क , जो भारत नेट कार्यक्रम का हिस्सा है, ने 1.15 लाख से अधिक ग्राम पंचायतों को जोड़ा है। डिजिटल विश्व में भारत को आगे ले जाने हेतु मोदी सरकार द्वारा पीएम वाणी योजना लाया गया है।

वाई-फाई एक्सेस नेटवर्क इंटरफेस (PM-WANI) से देश भर में सार्वजनिक वाईफाई सेवा का बड़ा नेटवर्क का निर्माण किया जा रहा है जिससे लोगों में रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। ई-स्किल योजना के द्वारा जिस कौशल विकास की संकल्पना साकार हो रही है उनमें गांव के युवा सहभाग कर वैश्विक जरूरतों के अनुरूप कौशल विकास सुनिश्चित कर रही है।

ई-संजीवनी कार्यक्रम 9 लाख से अधिक ऑनलाइन स्वास्थ्य परामर्श पूरा कर चुका है।

कृषि को युवाओं से जोड़ने की कवायद

युवा उद्यमियों हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में एग्री स्टार्टअप शुरू करने हेतु कृषिवर्धक निधि की स्थापना कर युवाओं को कृषि सामर्थ्य के साथ जोड़कर भारत की कृषि से जुड़ी लगभग 50%

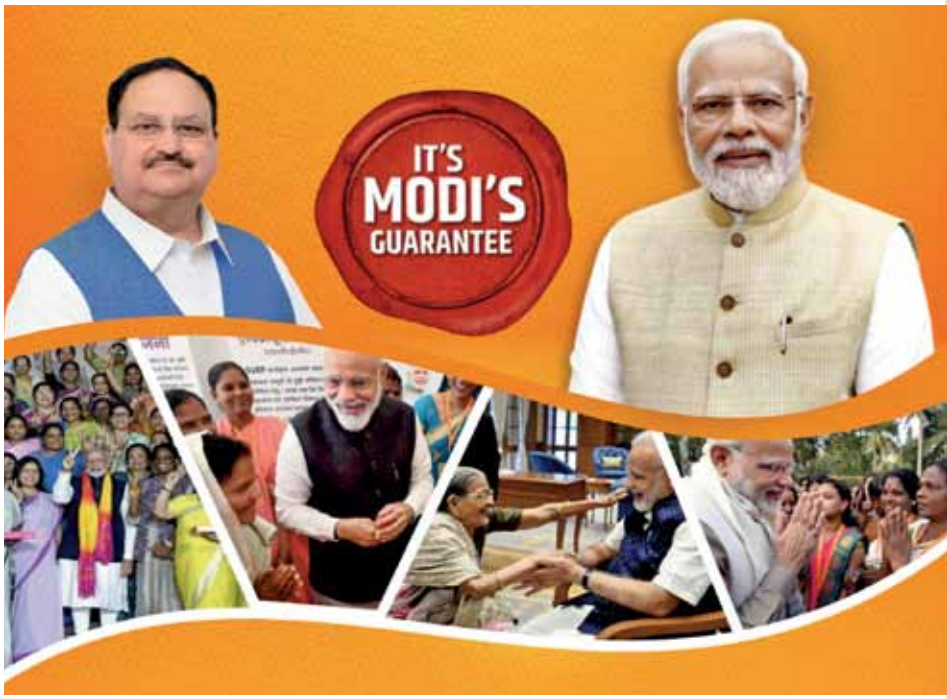

आबादी के व्यावसायिक स्तर में सुधार करना तथा GDP में कृषि के योगदान को बढ़ाकर युवा किसानों को बल प्रदान करना।

ई-नैम, राष्ट्रीय कृषि बाजार के रूप में एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म है जो कृषि वस्तुओं के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार स्थापित करने के लिए एपीएमसी और अन्य बाजार को जोड़ता है।

नई शिक्षा नीति से वैश्विक ज्ञान शक्ति बनेगा युवा

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही के स्तंभों पर आधारित है। इस नीति का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो सभी नागरिकों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके और भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में विकसित करके देश के परिवर्तन में सीधे योगदान दे। NEP-2000 के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में 'सकल नामांकन अनुपात को 26.3% (वर्ष 2018) से बढ़ाकर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है, इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ा जाएगा।

छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिये मानक-निर्धारक निकाय के रूप में 'परख' (PARAKH) नामक एक नए 'राष्ट्रीय आकलन केंद्र' (National Assessment Centre) की स्थापना की जाएगी।

खेलो इंडिया से भारत विश्व की नई खेल शक्ति

2017-18 में खेलो इंडिया का प्रारम्भ किया गया था एवं इसका उद्देश्य संगठित प्रतिभा पहचान, मानक खेल प्रतियोगिताओं और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से जमीनी स्तर पर भारत की खेल संस्कृति में सुधार करना था। जिला स्तर पर 1,000 से अधिक 'खेलो इंडिया सेंटर' शुरू हो चुके हैं। मोदी सरकार ने योग्य 23 लाख स्कूली छात्रों को खेल के क्षेत्र में आवश्यक अवसर प्रदान कर रही है। 'टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम' के तहत खिलाड़ियों को प्रति माह 50,000 रुपये का भत्ता, गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, आवश्यक तकनीकी सुविधाएं, सामग्री और उपकरण दिए जाते हैं। सरकार ने 'खेलो इंडिया' के तहत प्रति एथलीट प्रति वर्ष 6.28 लाख रुपये का भुगतान करने का प्रावधान किया है। मोदी सरकार हर संभावित क्षेत्र में युवाओं की प्रतिभा और क्षमता को निखारने का प्रयत्न कर रही है, जिससे कि युवा अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के साथ ही अपने आर्थिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए देश के विकास में अपना योगदान सुनिश्चित कर सकें। ▪

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं)

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यतगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली।

अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से संग्राम किया और रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की किन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपनी झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया। भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव-गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा, पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम 1857 में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

19 नवम्बर, 1835 को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही उसे घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे। उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हो गया। विवाह के बाद वह लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा।

जब वह 18 वर्ष की ही थीं, तब राजा का देहान्त हो गया। दुःख की बात यह भी थी कि वे तब तक निःसन्तान थे। युवावस्था के सुख देखने से पूर्व ही रानी विधवा हो गयीं। उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था, पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों की लार टपकने लगी। उन्होंने दामोदर राव को मान्यता देने से मनाकर झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से 50 कि.मी दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया, पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया। उसके पास साठ हजार सेना थी, पर रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये। इधर देश में जगह-जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन-चुन कर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया। रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली, पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे।

जनरल ह्यू रोज ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया. रानी दामोदर राव को पीठ पर बाँधकर 22 मार्च, 1858 को युद्धक्षेत्र में उतर गयी। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा, पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके।

नौवें दिन अपने बीस हजार सैनिकों के साथ तात्यां टोपे रानी की सहायता को आ गये, पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी से वह ग्वालियर आयीं। वहाँ 17 जून, 1858 को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी। रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। रानी केवल 22 वर्ष और सात महीने ही जीवित रहीं. पर ''खूब लड़ी मरदानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी.....'' गाकर उन्हें सदा याद किया जाता है। ▪

रानी दुर्गावती

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अत:रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं।

रानी दुर्गावती भारत की एक वीरांगना थीं जिन्होंने अपने विवाह के चार वर्ष बाद अपने पति दलपत शाह की असमय मृत्यु के बाद अपने पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बैठाकर उसके संरक्षक के रूप में स्वयं शासन करना प्रारंभ किया। इनके शासन में राज्य की बहुत उन्नति हुई। दुर्गावती को तीर तथा बंदूक चलाने का अच्छा अभ्यास था। चीते के शिकार में इनकी विशेष रुचि थी। उनके राज्य का नाम गढ़मंडला था जिसका केन्द्र जबलपुर था। वे प्रयागराज के मुगल शासक आसफ खान से लोहा लेने के लिये प्रसिद्ध हैं।

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था।

दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती के इस सुखी और संपन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाजबहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी।

इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में गोण्डवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन 24 जून 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को भेद दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वहीं रानी की समाधि बनी है, जहां गोण्ड जनजाति के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर मे स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है। ▪

बिरसा मुंडा
वनवासियों के महानायक

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग 'धरती बाबा' के नाम से पुकारते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये।

बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है।

बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुयी थी।

मुंडा रीती रिवाज के अनुसार उनका नाम बृहस्पतिवार के हिसाब से बिरसा रखा गया था। बिरसा के पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हटू था। उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया।

उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौहत्या का विरोध करने की लोगो को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया 'रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो।' उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जाता है। अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था।

बिरसा मुंडा ने सन 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा 'हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। बिरसा भी तीर कमान और भालों के साथ युद्ध की तैयारियों में लग गये। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रन पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर

चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौनसा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कम्युनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण
स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्मशक्ति क्षीण हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतोद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपनेअपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा की लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही।

वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा सपूर्ण ध्यान तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के संबंध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने सबन्ध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञानविज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन-सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिक विज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बने गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव को आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं। इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

» मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा मध्यप्रदेश के सांसदों के साथ एनडीए की बैठक में शामिल हुए।

» श्री शिवराज सिंह चौहान ने केन्द्रीय मंत्री का पदभार ग्रहण किया।

» श्रीमती सावित्री ठाकुर ने राज्य मंत्री का पदभार ग्रहण किया।

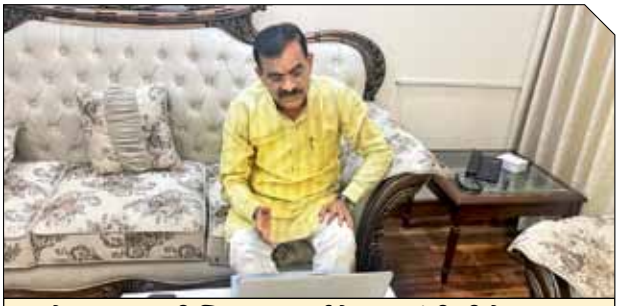

» प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने प्रधानमंत्री जी के शपथ ग्रहण के पश्चात उत्सव मनाने को लेकर कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

» डॉ. वीरेंद्र कुमार ने केन्द्रीय मंत्री का पदभार ग्रहण किया।

» श्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया ने केन्द्रीय मंत्री का पदभार ग्रहण किया।

» श्री दुर्गादास उइके ने राज्य मंत्री का पदभार ग्रहण किया।

» केन्द्र सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में संतों ने आर्शीवाद प्रदान किया।

फिर खिला कमल फिर मोदी सरकार